.....

इकाई 2 प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया में हिंदी

.....

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 भारत में प्रिंट मीडिया का विकास
1.3 भारतीय भाषाओं और हिंदी में पत्रकारिता का विकास
1.4 सूचना प्रौद्यौगिकी और जनसंचार
1.5 सोशल मीडिया

.....

1.1 प्रस्तावना

.....

संचार माध्यम (Communication Medium) से आशय है संदेश के प्रवाह में प्रयुक्त किए जाने वाले माध्यम। संचार माध्यमों के विकास के पीछे मुख्य कारण मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति का होना है। वर्तमान समय में संचार माध्यम और समाज में गहरा संबन्ध एवं निकटता है। इसके द्वारा जन सामान्य की रूचि एवं हितों को स्पष्ट किया जाता है। संचार माध्यमों ने ही सूचना को सर्वसुलभ कराया है। तकनीकी विकास से संचार माध्यम भी विकसित हुए हैं तथा इससे संचार अब ग्लोबल फेनोमेनो बन गया है।

संचार माध्यम, अंग्रेजी के "मीडिया" (मिडियम का बहुवचन) से बना है, जिसका अभिप्राय होता है दो बिंदुओं को जोड़ने वाला। संचार माध्यम ही संप्रेषक और श्रोता को परस्पर जोड़ते हैं। हेराल्ड लॉसवेल के अनुसार, संचार माध्यम के मुख्य कार्य सूचना संग्रह एवं प्रसार , सूचना विश्लेषण, सामाजिक मूल्य एवं ज्ञान का संप्रेषण तथा लोगों का मनोरंजन करना है।

संचार माध्यम का प्रभाव समाज में अनादिकाल से ही रहा है। परंपरागत एवं आधुनिक संचार माध्यम समाज की विकास प्रक्रिया से ही जुड़े हुए हैं। संचार माध्यम का श्रोता अथवा लक्ष्य समूह बिखरा होता है। इसके संदेश भी अस्थिर स्वभाव वाले होते हैं। फिर संचार माध्यम ही संचार प्रक्रिया को अंजाम तक पहुँचाते हैं।

आज के संचार के युग में मीडिया की अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत में इलेक्ट्रोनिक मीडिया पिछले 15-20 वर्षों में घर घर में पहुँच गया है फिर चाहे वह शहर हो या ग्रामीण क्षेत्र। इन शहरों और कस्बों में केबिल टीवी से सैकड़ो चैनल दिखाए जाते हैं। एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार भारत के कम से कम 80 प्रतिशत परिवारों के पास अपने टेलीविजन सेट हैं और मेट्रो शहरों में रहने वाले दो तिहाई लोगों ने अपने घरों में केबल कनेक्शन लगा रखे हैं। इसके साथ ही शहर से दूर-दराज के क्षेत्रों में भी लगातार डीटीएच-डायरेक्ट टु होम सर्विस का विस्तार हो रहा है।

उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- **भारत में प्रिंट मीडिया के इतिहास और विकासक्रम को समझ सकेंगे**
- **हिंदी पत्रकारिता के इतिहास और उसके विविध आयामों से परिचित होंगें**
- **सूचना प्रौद्यौगिकी और जनसंचार की दिशा और दशा को समझ सकेंगें**
- **सोशल मीडिया के स्वरूप और महत्व को बता सकेंगें**

.....

1.2 भारत में प्रिंट मीडिया का विकास

.....

भारत में मीडिया के विकास के पहले चरण को तीन हिस्सों में बाँट कर समझा जा सकता है। पंद्रहवीं और सोलहवीं सदी में ईसाई मिशनरी धार्मिक साहित्य का प्रकाशन करने के लिए भारत में प्रिंटिंग प्रेस ला चुके थे। गोवा में सर्वप्रथम धार्मिक प्रचार के उद्देश्य से पुर्तगालियों ने प्रेस स्थापित की। भारत का पहला अख़बार बंगाल गज़ट भी 29 जनवरी 1780 को एक अंग्रेज़ जेम्स ऑगस्टस हिकी ने निकाला। चूँकि हिकी इस साप्ताहिक के ज़रिये भारत में ब्रिटिश समुदाय के अंतर्विरोधों को कटाक्ष भरी भाषा में व्यक्त करते थे , इसलिए जल्दी ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और दो साल में अख़बार का प्रकाशन बंद हो गया। हिकी के बाद किसी अंग्रेज़ ने औपनिवेशिक हितों पर चोट करने वाला प्रकाशन नहीं किया।

उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक में कलकत्ता के पास श्रीरामपुर के मिशनरियों ने और तीसरे दशक में राजा राममोहन राय ने साप्ताहिक, मासिक और द्वैमासिक पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन-प्रारम्भ किया। पत्रकारिता के ज़रिये यह दो दृष्टिकोणों का टकराव था। श्रीरामपुर के मिशनरी भारतीय परम्परा को निम्नतर साबित करते हुए ईसाइयत की श्रेष्ठता स्थापित करना चाहते थे, जबकि राजा राममोहन राय की भूमिका हिंदू धर्म और भारतीय समाज के आंतरिक आलोचक की थी। वे परम्परा के उन रूपों की आलोचना कर रहे थे जो आधुनिकता के प्रति सहज नहीं थे। साथ में राजा राममोहन परम्परा के उपयोगी आयामों को ईसाई प्रेरणाओं से जोड़ कर एक नये धर्म की स्थापना की कोशिश में भी लगे थे। इस अवधि में मीडिया की सारवस्तु पर धार्मिक प्रश्नों और समाज सुधार के आग्रहों से संबंधित विश्लेषण और बहसें हावी रहीं।

समाज सुधार के प्रश्न पर व्यक्त होने वाला मीडिया का यह द्वि ध्रुवीय- चरित्र आगे चल कर औपनिवेशिक बनाम राष्ट्रीय के स्पष्ट विरोधाभास में विकसित हो गया और 1947 में सत्ता के हस्तांतरण तक कायम रहा। तीस के दशक तक अंग्रेज़ी के ऐसे अख़बारों की संख्या बढ़ती रही जिनका उद्देश्य अंग्रेज़ों के शासन की तरफ़दारी करना था। इनका स्वामित्व भी अंग्रेज़ों के हाथ में ही था। 1861 में बम्बई के तीन अख़बारों का विलय करके **टाइम्स ऑफ़ इण्डिया** की स्थापना भी ब्रिटिश हितों की सेवा करने के लिए रॉबर्ट नाइट ने की थी। 1849 में गिरीश चंद्र घोष ने पहला बंगाल रिकॉर्डर नाम से ऐसा पहला अख़बार निकाला जिसका स्वामित्व भारतीय हाथों में था। 1853 में इसका नाम बदल कर 'हिंदू पैट्रियट' हो गया। हरिश्चंद्र मुखर्जी के पराक्रमी सम्पादन में निकलने वाले इस पत्र ने विभिन्न प्रश्नों पर ब्रिटिश सरकार की कड़ी आलोचना की परम्परा का सूत्रपात किया। सदी के अंत तक एक तरफ़ तो उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रीय नेतृत्व का आधार बन चुका था , और दूसरी ओर स्वाधीनता की कामना का संचार करने के लिए सारे देश में विभिन्न भाषाओं में पत्र का प्रकाशन होने लगा था । भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता ब्रिटिश शासन को आड़े हाथों लेने में कतई नहीं चूकती थी। इसी कारण 1878 में अंग्रेज़ों ने वरनाकुलर प्रेस एक्ट बनाया ताकि अपनी आलोचना करने वाले प्रेस का मुँह बंद कर सकें । इसका भारत और ब्रिटेन में जम कर विरोध हुआ। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन हुआ जिसकी गतिविधियाँ उत्तरोत्तर मुखर राष्ट्रवाद की तरफ़ झुकती चली गयीं। भारतीय भाषाओं के प्रेस ने भी इसी रुझान के साथ ताल में ताल मिला कर अपना विकास किया। मीडिया के लिहाज़ से बीसवीं सदी को एक उल्लेखनीय विरासत मिली जिसके तहत तिलक, गोखले, दादाभाई नौरोजी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, मदनमोहन मालवीय और रवींद्रनाथ ठाकुर के नेतृत्व में अख़बारों और पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा था। बीस के दशक में गाँधी के दिशा-

निर्देश में कांग्रेस एक जनांदोलन में बदल गयी। स्वयं गाँधी ने राष्ट्रीय पत्रकारिता में तीन तीन-अख़बार निकाल कर योगदान दिया।

लेकिन इस विकासक्रम का एक दूसरा ध्रुव भी था। अगर इन राष्ट्रीय हस्तियों के नेतृत्व में मराठा, केसरी, बेंगाली, हरिजन, नवजीवन, यंग इण्डिया, अमृत बाज़ार पत्रिका , हिंदुस्तानी, एडवोकेट, ट्रिब्यून, अख़बारआम-ए-, साधना, प्रबासी, हिंदुस्तान रिव्यू, रिव्यू और अभ्युदय जैसे प्रकाशन उपनिवेशवाद विरोधी तर्कों और स्वाधीनता के विचार को अपना आधार बना रहे थे, तो कलकत्ता का स्टेट्समैन, बम्बई का टाइम्स ऑफ़ इण्डिया, मद्रास का मेल, लाहौर का सिविल ऐंड मिलिट्री गज़ट और इलाहाबाद का पायनियर खुले तौर पर अंग्रेज़ी शासन के गुण गाने में विश्वास करता था।

मीडियासंस्कृति का यह द्विभाजन भाषाई आधार पर ही और आगे बढ़ा।- राष्ट्रीय भावनाओं का पक्ष लेने वाले अंग्रेज़ी के अख़बारों की संख्या गिनी चुनी ही रह गयी। अंग्रेज़ी के बाकी अख़बार- अंग्रजों के पिट्ठू बन गये। भारतीय भाषाओं के अख़बारों ने खुल कर उपनिवेशवादविरोधी आवाज़ उठानी शुरू कर दी। अंग्रेज़ समर्थक अख़बारों के पत्रकारों के वेतन और सुविधाओं का स्तर भारतीय भाषाओं के प्रकाशनों में कार्यरत पत्रकारों के वेतन आदि से बहुत अच्छा था। ब्रिटिश समर्थक अख़बारों को खूब विज्ञापन मिलते थे और उनके लिए संसाधनों की कोई कमी न थी। उपनिवेशवाद विरोधी अख़बारों का पूँजी आधार कमज़ोर था। बहरहाल-, अंग्रेज़ी पत्रकारिता के महत्त्व को देखते हुए जल्दी ही मालवीय , मुहम्मद अली, ऐनी बेसेंट, मोतीलाल नेहरू आदि ने राष्ट्रवादी विचारों वाले अंग्रेज़ी अख़बारों लीडर), कॉमरेड, मद्रास स्टेंडर्ड, न्यूज, इंडिपेंडेंट, सिंध ऑब्ज़र्वरकी शुरुआत की। (दिल्ली से 1923 में कांग्रेस का समर्थन करने वाले भारतीय पूँजीपति घनश्याम दास बिड़ला ने द हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन शुरू किया। 1938 में जवाहरलाल नेहरू ने अंग्रेज़ी के राष्ट्रवादी अख़बार नैशनल हैरल्ड की स्थापना की।

1826 में कलकत्ता से जुगल किशोर सुकुल ने उदंत मार्तण्ड नामक पहला हिंदी समाचार पत्र प्रकाशित किया था। हिंदी मीडिया ने अपनी दावेदारी बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में पेश की जब गणेश शंकर विद्यार्थी ने प्रताप , बालमुकुंद गुप्त और अम्बिका शरण वाजपेयी ने भारत मित्र , महेशचंद्र अग्रवाल ने विश्वमित्र और शिवप्रसाद गुप्त ने आज की स्थापना की। एक तरह से यह हिंदीप्रेस की नींव पड़ी।- प्रेस की शुरुआत थी। इसी दौरान उर्दू- अबुल कलाम आज़ाद ने अल- बिलाग़ का प्रकाशन शुरू किया- हिलाल और अल, मुहम्मद अली ने हमदर्द का। लखनऊ से हकीकत, लाहौर से प्रताप और मिलाप और दिल्ली से तेज़ का प्रकाशन होने लगा। बांग्ला में संध्या, नायक, बसुमती, हितबादी, नबशक्ति, आनंद बाज़ार पत्रिका , जुगांतर, कृषक और

नबजुग जैसे प्रकाशन अपने अपने दृष्टिकोणों से उपनिवेशवाद विरोधी अभियान में भागीदारी-कर रहे थे। मराठी में इंदुप्रकाश, नवकाल, नवशक्ति और लोकमान्य ; गुजराती में गुजराती पंच, सेवक, गुजराती और समाचार , वंदेमातरम्; दक्षिण भारत में मलयाला मनोरमा , मातृभूमि, स्वराज, अलअमीन-, मलयाला राज्यम, देशाभिमानी, संयुक्त कर्नाटक, आंध्र पत्रिका, कल्कि, तंति, स्वदेशमित्रम्, देशभक्तम् और दिनामणि यही भूमिका निभा रहे थे।

यहाँ एक सवाल उठ सकता है कि यह राष्ट्रीय मीडिया किन मायनों में राष्ट्रीय था? इसमें कोई शक नहीं कि ये सभी पत्रपत्रिकाएँ ब्रिटिश शासन की- विरोधी थीं, लेकिन उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन की दशा और दिशा को लेकर उनके बीच वैसे ही मतभेद थे जैसे कांग्रेस और अन्य राजनीतिक शक्तियों के बीच दिखाई पड़ते थे। ब्रिटिश प्रशासन ने 1924 में मद्रास में एक शौकिया रेडियो क्लब बनाने की अनुमति दी। तीन साल बाद निजी क्षेत्र में ब्रॉडकास्ट कम्पनी ने बम्बई और कलकत्ता में नियमित रेडियो प्रसारण शुरू किया। लेकिन साथ में शौकिया रेडियो क्लब भी चलते रहे। प्रेक्षकों की मान्यता है कि जिस तरह इन शौकिया क्लबों के कारण अंग्रेज़ों को रेडियो की बाकायदा स्थापना करनी पड़ी, कुछकुछ इसी तर्ज़ पर प्राइवेट केबिल ऑपरेटरों- के कारण नब्बे के दशक में सरकार को टेलिविज़न का आंशिक निजीकरण करने की इजाज़त देनी पड़ी।

बहरहाल, औपनिवेशिक सरकार ने 1930 में ब्रॉडकास्टिंग को अपने हाथ में ले लिया और 1936 में उसका नामकरण 'आल इण्डिया रेडियो ' या 'आकाशवाणी' कर दिया गया। हैदराबाद, त्रावणकोर, मैसूर, बड़ोदरा, त्रिवेंद्रम और औरंगाबाद जैसी देशी रियासतों में भी प्रसारण चालू हो गया। रेडियो पूरी तरह से अंग्रेज़ सरकार के प्रचारतंत्र का अंग था। सेंसरशिप , सलाहकार बोर्ड और विभागीय निगरानी जैसे संस्थागत नियंत्रक उपायों द्वारा अंग्रेज़ों ने यह सुनिश्चित किया कि उपनिवेशवाद विरोधी राजनीति के पक्ष में रेडियो से एक शब्द भी प्रसारित न होने पाये। दिलचस्प बात यह है कि यह अंग्रेज़ी विरासत भारत के आज़ाद होने के बाद भी जारी रही। अंग्रेज़ों के बाद आकाशवाणी को भारत सरकार ने उस समय तक अपना ताबेदार बनाये रखा जब तक 1997 में आकाशवाणी एक स्वायत्त संगठन का अंग नहीं बन गयी।

द्वितीय चरण

चूँकि भारतीय मीडिया के दोनों ध्रुवों ने उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष के पक्ष या विपक्ष में रह कर ही अपनी पहचान बनायी थी , इसलिए स्वाभाविक रूप से राजनीति उसका केंद्रीय सरोकार बनती चली गयी। 15 अगस्त 1947 को जैसे ही सत्ता का हस्तांतरण हुआ और अंग्रेज़ भारत से

जाने के लिए अपना बोरियाबिस्तर समेटने लगे-, मीडिया और सरकार के संबंध बुनियादी तौर से बदल गये। एक तरफ़ तो अंग्रेज़ों द्वारा लगायी गयी पाबंदियाँ प्रभावी नहीं रह गयीं, और दूसरी तरफ़ ब्रिटिश शासन की पैरोकारी करने वाले ज़्यादातर अख़बारों का स्वामित्व भारतीयों के हाथ में चल गया। लेकिन इससे भी ज़्यादा महत्त्वपूर्ण यह था कि मीडिया ने राजनीतिक नेतृत्व के साथ कंधे से कंधा मिला कर आधुनिक भारतीय राष्ट्र का निर्माण करना शुरू किया। मीडिया के विकास का यह दूसरा चरण अस्सी के दशक तक जारी रहा। इस लम्बे दौर के चार उल्लेखनीय आयाम थे :

1. एक सुपरिभाषित 'राष्ट्र-हित' के आधार पर आधुनिक भारत के निर्माण में सचेत और सतर्क भागीदारी की परियोजना,
2. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में कटौती करने की सरकारी कोशिशों के ख़िलाफ़ संघर्ष,
3. विविधता एवं प्रसार की ज़बरदस्त उपलब्धि के साथ-साथ भाषाई पत्रकारिता द्वारा अपने महत्त्व और श्रेष्ठता की स्थापना, और
4. प्रसारण-मीडिया की सरकारी नियंत्रण से एक सीमा तक मुक्ति।

स्वतंत्र भारत में सरकार को गिराने या बदनाम करने में प्रेस ने कोई रुचि नहीं दिखाई। लेकिन साथ ही वह सत्ता का ताबेदार बनने के लिए तैयार नहीं था। उसका रवैया रेडियो और टीवी से अलग तरह का था। रेडियो प्रसारण करने वाली- 'आकाशवाणी' पूरी तरह से सरकार के हाथ में थी। 1959 में 'शिक्षात्मक उद्देश्यों' से शुरू हुए टेलिविज़न (दूरदर्शन) की प्रोग्रामिंग की ज़िम्मेदारी भी रेडियो को थमा दी गयी थी। इसके विपरीत शुरू से ही निजी क्षेत्र के स्वामित्व में विकसित हुए प्रेस ने सरकार , सत्तारूढ़ कांग्रेस, विपक्षी दलों और अधिकारीतंत्र को बार बार-हित की-परिभाषित राष्ट्र-स्व कसौटी पर कस कर देखा। यह प्रक्रिया उसे व्यवस्था का अंग बन कर उसकी आंतरिक आलोचना करने वाली सतर्क एजेंसी की भूमिका में ले गयी। भारतीय मीडिया के कुछ अध्येताओं ने माना भी है कि अंग्रेज़ों के बाद सरकार को दिया गया प्रेस का समर्थन एक 'सतर्क समर्थन' ही था।

प्रेस ने 'राष्ट्रहित-' की एक सर्वमान्य परिभाषा तैयार की जिसे मनवाने के लिए न कोई मीटिंग की गयी और न ही कोई दस्तावेज़ पारित किया गया। पर इस बारे में कोई मतभेद नहीं था कि उदीयमान राष्ट्र राज्य जिस ढाँचे के आधार पर- खड़ा होगा, उसका चरित्र लोकतांत्रिक और सेकुलर ही होना चाहिए। उसने यह भी मान लिया था कि ऐसा करने के लिए उत्पीड़ित सामाजिक तबकों और समुदायों का लगातार सबलीकरण अनिवार्य है। प्रेस मालिक-, प्रबंधक और प्रमुख पत्रकार अपने अपने ढंग से यह भी मानते थे कि इस लक्ष्य को वेधने के लिए ग़रीबी-

को समृद्धि में बदलना पड़ेगा जिसका रास्ता वैकासिक अर्थशास्त्र और मिश्रित अर्थव्यवस्था से हो कर जाता है। स्वतंत्र भारत की विदेश नीति)गुटनिरपेक्षता और अन्य देशों के साथ शांतिपूर्ण सह्के प्रति भी मीडिया ने सकारात्मक सहमति दर्ज करायी। (अस्तित्व-

दूसरी तरफ़ सरकार ने अपनी तरफ़ से प्रेस के कामकाज को विनियमित करने के लिए एक संस्थागत ढाँचा बनाना शुरू कर दिया। 1952 और 1977 में दो प्रेस आयोग गठित किये गये। 1965 में एक संविधानगत संस्था प्रेस परिषद् की स्थापना हुई। 1956 में 'रजिस्ट्रेशन ऑफ़ बुक्स एक्ट' के तहत प्रेस रजिस्ट्रार ऑफ़ इण्डिया की स्थापना की गयी। इन उपायों में प्रेस की आज़ादी को सीमित करने के अंदेशे भी देखे जा सकते थे , पर प्रेस ने इन कदमों पर आपत्ति नहीं की। उसे यकीन था कि सरकार किसी भी परिस्थिति में संविधान के अनुच्छेद 19(1)(ए (के तहत मिलने वाली अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की गारंटी का उल्लंघन नहीं करेगी। संविधान में स्पष्ट उल्लेख न होने के बावजूद सर्वोच्च कोर्ट ने इस गारंटी में प्रेस की स्वतंत्रता को भी शामिल मान लिया था। लेकिन प्रेस का यह यकीन 1975 में टूट गया जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने अपने राजनीतिक संकट से उबरने के लिए देश पर आंतरिक आपातकाल थोप दिया। नतीजे के तौर पर नागरिक अधिकार मुल्तवी कर दिये गये , स्वतंत्र अभिव्यक्ति और प्रेस पर पाबंदियाँ लगा दी गयीं। 253 पत्रकार नज़रबंद किये गये, सात विदेशी संवाददाता निष्कासित कर दिये गये, सेंसरशिप थोपी गयी और प्रेस परिषद् भंग कर दी गयी। भारतीय प्रेस अपने ऊपर होने वाले इस आक्रमण का उतना विरोध नहीं कर पाया , जितना उसे करना चाहिए था। किन्तु कुछ ने सरकार के सामने घुटने टेक दिये , पर कुछ ने नुकसान सह कर भी आपातकाल की पाबंदियों का प्रतिरोध किया।

उन्नीस महीने बाद यह आपातकाल चुनाव की कसौटी पर पराजित हो गया , पर इस झटके के कारण पहली बार भारतीय प्रेस ने अपनी आज़ादी के लिए लड़ने की ज़रूरत महसूस की। राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया- में हिस्सेदारी करने की उसकी भूमिका पहले से भी अधिक 'सतर्क' हो गयी। पत्रकारों की सतर्क निगाह ने देखा कि आपातकाल की पराजय के बाद भी राजनीतिक और सत्ता प्रतिष्ठान में प्रेस की स्वतंत्रता में कटौती करने की प्रवृत्ति ख़त्म नहीं हुई है। इसके बाद अस्सी का दशक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए चलाये गये संघर्षों का दशक साबित हुआ। 1982 में बिहार प्रेस विधेयक और 1988 में लोकसभा द्वारा पारित किये गये मानहानि विधेयक को राजसत्ता पत्रकारों द्वारा किये गये आंदोलनों के कारण कानून में नहीं बदल पाये। दूसरी तरफ़ इंदिरा गाँधी की सरकार द्वारा एक्सप्रेस समाचारपत्र समूह- को सताने

के लिए चलाये गये अभियान से यह भी साफ़ हुआ कि किसी अख़बार द्वारा किये जा रहे विरोध को दबाने के लिए कानून बदलने के बजाय सत्ता का थोड़ा सा दुरुपयोग ही काफ़ी है।

आपातकाल के विरुद्ध चले लोकप्रिय संघर्ष के परिणामस्वरूप सारे देश में राजनीतीकरण की प्रक्रिया पहले के मुकाबले कहीं तेज़ हो गयी। लोकतंत्र और उसकी अनिवार्यता के प्रति नयी जागरूकता ने अख़बारों की तरफ़ नये पाठकों का ध्यान आकर्षित किया। ये नये पाठक निरंतर बढ़ती जा रही साक्षरता की देन थे। बढ़ती हुई प्रसार संख्याओं के फलस्वरूप मुद्रित मीडिया का दृष्टिकोण व्यावसायिक और बाज़ारोन्मुख हुआ। राजनीतीकरण, साक्षरता और पेशेवराना दृष्टिकोण के साथ इसी समय एक सुखद संयोग के रूप में नयी प्रिंटिंग प्रौद्योगिकी जुड़ गयी। डेक्सटॉप पब्लिशिंग सिस्टम और कम्प्यूटर आधारित- डिज़ाइनिंग ने अख़बारों और पत्रिकाओं के प्रस्तुतीकरण में नया आकर्षण पैदा कर दिया। इस प्रक्रिया ने विज्ञापन से होने वाली आमदनी में बढ़ोतरी की। अस्सी के दशक के दौरान हुए इन परिवर्तनों में सबसे महत्त्वपूर्ण था भाषाई पत्रकारिता का विकास। हिंदी, पंजाबी, मराठी, गुजराती, बांग्ला, असमिया और दक्षिण भारतीय भाषाओं के अख़बारों को इस नयी परिस्थिति का सबसे ज़्यादा लाभ हुआ। अस्सी का दशक इन भाषाई क्षेत्रों में नये पत्रकारों के उदय का दशक भी था। इस विकासक्रम के बाद भाषाई पत्रकारिता ने फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा। नयी सदी में राष्ट्रीय पाठक सर्वेक्षण के आँकड़ों ने बताया कि अब अंग्रेज़ी प्रेस के हाथों में मीडिया की लगाम नहीं रह गयी है। सबसे अधिक प्रसार संख्या वाले पहले दस अख़बारों में अंग्रेज़ी का केवल एक ही पत्र रह गया, वह भी नीचे से दूसरे स्थान पर।

अस्सी के दशक में ही प्रसारण मीडिया के लिए एक सीमा तक सरकारी नियंत्रण- से मुक्त होने की परिस्थितियाँ बनीं। 1948 में संविधान सभा में बोलते हुए जवाहरलाल नेहरू ने वायदा किया था कि आज़ाद भारत में ब्रॉडकास्टिंग का ढाँचा ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन (बीबीसी के तर्ज़ पर होगा। यह आश्वासन पूरा करने में स्वतंत्र भारत की (सरकारों को पूरे 42 साल लग गये। इसके पीछे रेडियो और टीवी को सरकार द्वारा निर्देशित राजनीतिक सामाजिक- परिवर्तन के लिए ही इस्तेमाल करने की नीति थी। इस नीति के प्रभाव में रेडियो का तो एक माध्यम के रूप में थोड़ा बहुत विकास- हुआ, पर टीवी आगे नहीं बढ़ पाया। इतना ज़रूर हुआ कि 1975-76 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरोने (अमेरिका से एक उपग्रह उधार लिया ताकि देश के विभिन्न हिस्सों में 2,400 गाँवों में कार्यक्रमों का प्रसारण हो सके। इसे 'सेटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलिविज़न एक्सपेरीमेंट' (साइट कहा गया। इसकी सफलता से (विभिन्न भाषाओं में टीवी कार्यक्रमों के निर्माण और प्रसारण की सम्भावनाएँ खुलीं। फिर 1982 में दिल्ली एशियाड का प्रसारण करने के लिए रंगीन टीवी की शुरुआत हुई। इसके कारण टीवी

के प्रसार की गति बढ़ी। 1990 तक उसके ट्रांसमीटरों की संख्या 519 और 1997 तक 900 हो गयी। बीबीसी जैसा स्वायत्त कॉरपोरेशन बनाने के संदर्भ में 1966 तक केवल इतनी प्रगति हो पायी कि भारत के पूर्व महालेखा नियंत्रक ए चंदा के .के. नेतृत्व में बनी कमेटी द्वारा आकाशवाणी और दूरदर्शन को दो स्वायत्त निगमों के रूप में गठित करने की सिफ़ारिश कर दी गयी। बारह साल तक यह सिफ़ारिश भी ठंडे बस्ते में पड़ी रही। 1978 में बी वर्गीज की .जी. अध्यक्षता में गठित किये गये एक कार्यदल ने 'आकाश भारती' नामक संस्था गठित करने का सुझाव दिया। साल भार बाद मई, 1979 में प्रसार भारती नामक कॉरपोरेशन बनाने का विधेयक संसद में लाया गया जिसके तहत आकाशवाणी और दूरदर्शन को काम करना था। प्रस्तावित कॉरपोरेशन के लिए वर्गीज कमेटी द्वारा सुझाये गये आकाश भारती के मुकाबले कम अधिकारों का प्रावधान किया गया था। जो भी हो , जनता पार्टी की सरकार गिर जाने के कारण यह विधेयक पारित नहीं हो पाया।

1985 से 1988 के बीच दूरदर्शन को आज़ादी का एक हल्का सा झोंका नसीब हुआ। इसका श्रेय भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी भास्कर घोष को जाता है जो इस दौरान दूरदर्शन के महानिदेशक रहे। प्रसार भारती विधेयक पारित कराने की ज़िम्मेदारी विश्वनाथ प्रताप सिंह की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने 1990 में पूरी की। लेकिन प्रसार भारती गठित होते होते सात-साल और गुज़र गये। तकनीकी रूप से कहा जा सकता है कि आज दूरदर्शन और आकाशवाणी स्वायत्त हो गये हैं। लेकिन हकीकत में सूचना और प्रसारण मंत्रालय का एक अतिरिक्त सचिव ही प्रसार भारती का मुख्य कार्यकारी अधिकारी होता है। (सीईओ) अगर यह स्वायत्तता है तो बहुत सीमित किस्म की।

तृतीय चरण

नब्बे के दशक में कदम रखने के साथ ही भारतीय मीडिया को बहुत बड़ी हद तक बदली हुई दुनिया का साक्षात्कार करना पड़ा। इस परिवर्तन के केंद्र में 1990-91 की तीन परिघटनाएँ थीं : मण्डल आयोग की सिफ़ारिशों से निकली राजनीति , मंदिर आंदोलन की राजनीति और भूमण्डलीकरण के तहत होने वाले आर्थिक सुधार। इन तीनों ने मिल कर सार्वजनिक जीवन के वामोन्मुख रुझानों को नेपथ्य में धकेल दिया और दक्षिणपंथी लहज़ा मंच पर आ गया। यही वह क्षण था जब सरकार ने प्रसारण के क्षेत्र में 'खुला आकाश' की नीति अपनानी शुरू की। नब्बे के दशक में उसने न केवल प्रसार भारती निगम बना कर आकाशवाणी और दूरदर्शन को एक हद तक स्वायत्तता दी , बल्कि स्वदेशी निजी पूँजी और विदेशी पूँजी को प्रसारण के क्षेत्र में कदम रखने की अनुमति भी दी। प्रिंट मीडिया में विदेशी पूँजी को प्रवेश करने का रास्ता खोलने में

उसे कुछ वक्त लगा लेकिन इक्कीसवीं सदी के पहले दशक में उसने यह फ़ैसला भी ले लिया। मीडिया अब पहले की तरह 'सिंगलसेक्टर-' यानी मुद्रण प्रधान नहीं रह- गया। उपभोक्ता क्रांति कारण विज्ञापन से होने वाली आमदनी में कई गुना बढ़ोतरी हुई जिससे हर तरह के मीडिया के लिए विस्तार हेतु पूँजी की कोई कमी नहीं रह गयी। सेटेलाइट टीवी पहले केबिल टीवी के माध्यम से दर्शकों तक पहुँचा जो प्रौद्योगिकी और उद्यमशीलता की दृष्टि से स्थानीय पहलकदमी और प्रतिभा का असाधारण नमूना था। इसके बाद आयी डीटीएच प्रौद्योगिकी जिसने समाचार प्रसारण और मनोरंजन की दुनिया को पूरी तरह से बदल डाला। एफ़एम रेडियो चैनलों की कामयाबी से रेडियो का माध्यम मोटर वाहनों से आक्रांत नागर संस्कृति का एक पर्याय बन गया। 1995 में भारत में इंटरनेट की शुरुआत हुई और इक्कीसवीं सदी के पहले दशक के अंत तक बड़ी संख्या में लोगों के निजी और व्यावसायिक जीवन का एक अहम हिस्सा नेट के ज़रिये संसाधित होने लगा। नयी मीडिया प्रौद्योगिकियों ने अपने उपभोक्ताओं को 'कनवर्जेंस' का उपहार दिया जो जादू की डिबिया की तरह हाथ में थमे मोबाइल फ़ोन के ज़रिये उन तक पहुँचने लगा। इन तमाम पहलुओं ने मिल कर मीडिया का दायरा इतना बड़ा और विविध बना दिया कि उसके आग़ोश में सार्वजनिक जीवन के अधिकतर आयाम आ गये। इसे 'मीडियास्फ़ेयर' जैसी स्थिति का नाम दिया गया।

प्रिंट मीडिया में विदेशी पूँजी को इजाज़त मिलने का पहला असर यह पड़ा कि रियूतर, सीएनयेन और बीबीसी जैसे विदेशी मीडिया संगठन भारतीय मीडियास्फ़ेयर की तरफ़ आकर्षित होने लगे। उन्होंने देखा कि भारत में श्रम का बाज़ार बहुत सस्ता है और अंतराष्ट्रीय मानकों के मुकाबले यहाँ वेतन पर अधिक से अधिक एक चौथाई ही ख़र्च करना पड़ता है।- इसलिए इन ग्लोबल संस्थाओं ने भारत को अपने मीडिया प्रोजेक्टों के लिए आउटसोर्सिंग का केंद्र बनाया भारतीय बाज़ार में मौजूद मीडिया के विशाल और असाधारण टेलेंट पूल का- ग्लोबल बाज़ार के लिए दोहन होने लगा। दूसरी तरफ़ भारत की प्रमुख मीडिया कम्पनियाँ टाइम्स) ग्रुप, आनंद बाज़ार पत्रिका, जागरण, भास्कर, हिंदुस्तान टाइम्सवाल (स्ट्रीट जरनल, बीबीसी, फ़ाइनेंसियल टाइम्स, इंडिपेंडेंट न्यूज़ ऐंड मीडिया और ऑस्ट्रेलियाई प्रकाशनों के साथ सहयोग समझौते करती नज़र आयीं।- घराना संचालित कम्पनियों पर आधारित मीडिया- बिज़नेस ने पूँजीबाज़ार में जा कर अपने अपने इनीशियल पब्लिक ऑफ़रिंग्स अर्थात्- आईपीओ प्रस्ताव जारी करने शुरू कर दिये। इनकी शुरुआत पहले एनडीटीवी, टीवी टुडे, ज़ी टेलिफ़िल्म्स जैसे दृश्य मीडिया ने की। इलेक्ट्रॉनिक- मीडिया के तर्ज़ पर प्रिंट मीडिया ने भी- पूँजी बाज़ार में छलाँग लगायी और अपने विस्तार के लिए निवेश हासिल करने में जुट गया। ऐसा पहला प्रयास 'द डेकन क्रॉनिकल' ने किया जिसकी सफलता ने प्रिंट मीडि-या के लिए पूँजी का संकट काफ़ीकुछ हल कर दिया।-

दूसरी तरफ़ बाज़ारवाद के बढ़ते हुए प्रभाव और उपभोक्ता क्रांति में आये उछाल के परिणामस्वरूप विज्ञापन चौगुनी बढ़ोतरी हुई।-रात-दूनी- जगत में दिन- चालीस के दशक की शुरुआत में विज्ञापन एजेंसियों की संख्या चौदह से बीस के आस पास रही होगी।-1979-80 में न्यूज़पेपर सोसाइटी की मान्यता (आईएनएस) प्राप्त एजेंसियों की संख्या केवल 168 तक ही बढ़ सकी थी। लेकिन , भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ने अगले दो दशकों में उनकी संख्या 750 कर दी जो चार सौ करोड़ रुपये सालाना का धंधा कर रही थीं। 1997-98 में सबसे बड़ी पंद्रह विज्ञापन एजेंसियों ने ही कुल 4,105.58 करोड़ रुपये के बिल काटे। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि उपभोक्ता क्रांति का चक्का कितनी तेज़ी से घूम रहा था। विज्ञापन की- रंगीन और मोहक हवाओं पर सवार हो कर दूर दूर तक फैलते उपभोग के संदेशों ने- उच्च वर्ग, उच्च-मध्यम वर्ग, समूचे मध्य वर्ग और मज़दूर वर्ग के ख़ुशहाल होते हुए महत्त्वाकांक्षी हिस्से को अपनी बाँहों में समेट लिया। मीडिया का विस्तार विज्ञापनों में हुई ज़बरदस्त बढ़ोतरी के बिना सम्भव नहीं था।

प्रिंट मीडिया और रेडियो विज्ञापनों को उतना असरदार कभी नहीं बना सकता- था जितना टीवी ने बनाया। टीवी का प्रसार भारत में देर से अवश्य हुआ, लेकिन एक बार शुरुआत होने पर उसने मीडिया की दुनिया में पहले से स्थापितमुद्रितमाध्यम को जल्दी ही व्यावसायिक रूप से- असुरक्षाग्रस्त कर दिया। इस प्रक्रिया में केबिल और डीटीएच के योगदान का उल्लेख करना आवश्यक है। केबिल टीवी का प्रसार और सफलता भारतीयों की उद्यमी प्रतिभा का ज़ोरदार नमूना है। सरकार के पास चूँकि किसी सुसंगत संचार नीति का अभाव था इसलिए नब्बे के दशक की शुरुआत में बहुमंज़िली इमारतों में रहने वाली मध्यवर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय- आबादियों में कुछ उत्साही और चतुर लोगों ने अपनी निजी पहलकदमी पर क्लोज़ सरकिट टेलिविज़न प्रसारण का प्रबन्ध किया जिसका केंद्र एक सेंट्रल कंट्रोल रूम हुआ करता था। इन लोगों ने वीडियो प्लेयरों के ज़रिये भारतीय और विदेशी फ़िल्में दिखाने की शुरुआत की। साथ में दर्शकों को मनोरंजन की चौबीस घंटे चलने वाली खुराक देने वाले विदेशी देशी सेटेलाइट- चैनल भी देखने को मिलते थे। जनवरी, 1992 में केबिल नेटवर्क के पास केवल 41 लाख ग्राहक थे। लेकिन केवल चार साल के भीतर 1996 में यह संख्या बानवे लाख हो गयी। अगले साल तक पूरे देश में टीवी वाले घरों में से 31 प्रतिशत घरों में केबिल प्रसारण देखा जा रहा था। सदी के अंत तक बड़े आकार के गाँवों और कस्बों के टीवी दर्शकों तक केबिल की पहुँच हो चुकी थी। केबिल और उपग्रहीय टीवी चैनलों की लोकप्रियता देख कर प्रमुख मीडिया कम्पनियों ने टीवी कार्यक्रमनिर्माण के- व्यापार में छलाँग लगा दी। वे पब्लिक और प्राइवेट टीवी चैनलों को कार्यक्रमों की सप्लाई करने लगे।

स्पष्ट है कि केबिल और डीटीएच के कदम तभी जम सकते थे , जब पहले पब्लिक (सरकारी (टेलिविज़न प्रसारण में (निजी पूँजी के स्वामित्व में) और प्राइवेट हुई वृद्धि ने ज़मीन बना दी हो। 1982 में दिल्ली एशियाड के मार्फ़त रंगीन टीवी के कदम पड़ते ही भारत में टीवी ट्रांसमीटरों की संख्या तेज़ी से बढ़ी। पब्लिक टीवी के प्रसारण नेटवर्क दूरदर्शन ने नौ सौ ट्रांसमीटरों और तीन विभिन्न सेटेलाइटों की मदद से देश के 70 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र को और 87 % आबादी को अपने दायरे में ले लिया पंद्रह साल में)230 फ़ीसदी की वृद्धि। उसका मुख्य चैनल(यानी अमेरिका की आबादी) वन तीस करोड़ लोगों-डीडी से भी अधिक तक पहुँचने का दावा (करने लगा। प्राइवेट टीवी प्रसारण केबिल और डीटीएच के द्वारा अपनी पहुँच लगातार बढ़ा रहा है। लगभग सभी ग्लोबल टीवी नेटवर्क अपनी बल पर या स्थानीय पार्टनरों के साथ अपने प्रसारण का विस्तार कर रहे हैं। भारतीय चैनल भी पीछे नहीं हैं और उनके साथ रात दिन-प्रतियोगिता में लगे हुए हैं। अंग्रेज़ी और हिंदी के चैनलों के साथसाथ क्षेत्रीय- भाषाओं विशेषकर) (दक्षिण भारतीयके मनोरंजन और न्यूज़ चैनलों की लोकप्रियता और व्यावसायिक कामयाबी भी उल्लेखनीय है। सरकार की दूरसंचार नीति इन मीडिया कम्पनियों को इजाज़त देती है कि वे सेटेलाइट के साथ सीधे अपलिंकिंग करके प्रसारण कर सकते हैं। अब उन्हें अपनी सामग्री विदेश संचार निगम (वीएसएनयेल) के रास्ते लाने की मजबूरी का सामना नहीं करना पड़ता।

अगस्त, 1995 से नवम्बर , 1998 के बीच सरकारी संस्था विदेश संचार निगम लिमिटेड (वीएसएनयेल द्वारा ही इंटरनेट सेवाएँ मुहैया करायी जाती थीं। य (ह संस्था कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और नयी दिल्ली स्थित चार इंटरनैशनल टेलिकम्युनिकेशन गेटवेज़ के माध्यम से काम करती थी। नैशनल इंफ़ोमेटिक्स सेंटर (एनआईसीनेट और एजुकेशनल ऐंड रिसर्च नेटवर्क (ऑफ़ द डिपार्टमेंट ऑफ़ इलेक्ट्रॉनिक्स कुछ विशेष प्रकार के (ईआरएनयीटी)'क्लोज़्ड यूज़र ग्रुप्स' को ये सेवाएँ प्रदान करते थे। दिसम्बर , 1998 में दूरसंचार विभाग ने बीस प्राइवेट ऑपरेटरों को आईएसपी लाइसेंस प्रदान करके इस क्षेत्र का निजीकरण कर दिया। 1999 तक सरकार के तहत चलने वाले महानगर टेलिफ़ोन निगम सहित 116 आईएसपी कम्पनियाँ सक्रिय हो चुकी थीं। केबिल सर्विस देने वाले भी इंटरनेट उपलब्ध करा रहे थे।

जैसेजैसे बीएसएनएल ने अपना शुल्क घटाया-, इंटरनेट सेवाएँ सस्ती होती चली गयीं। देश भर में इंटरनेट कैफ़े दिखने लगे। जुलाई , 1999 तक भारत में 114,062 इंटरनेट होस्ट्स की पहचान हो चुकी थी। इनकी संख्या में 94 प्रतिशत की दर से बढ़ोतरी दर्ज की गयी। नयी सदी में कदम रखते ही सारे देश में कम्प्यूटर बूम की आहटें सुनी जाने लगीं। पर्सनल कम्प्यूटरों की संख्या तेज़ी से बढ़ने लगी और साथ ही इंटरनेट प्रयोक्ताओं की संख्या भी। ईकॉमर्स- की भूमि तैयार होने लगी और बैंकों ने उसे प्रोत्साहित करना शुरू किया। देश के प्रमुख अख़बार ऑन

लाइन संस्करण प्रकाशित करने लगे। विज्ञापन एजेंसियाँ भी अपने उत्पादों को नेट पर बेचने लगीं। नेट ने व्यक्तिगत जीवन की क्वालिटी में एक नये आयाम का समावेश किया। रेलवे और हवाई जहाज़ के टिकट बुक कराने से लेकर घर में लीक होती छत को दुरुस्त करने के लिए नेट की मदद ली जाने लगी। नौकरी दिलाने वाली और शादी ब्याह संबंधी वेबसाइट्स अत्यंत-लोकप्रिय साबित हुईं। वर वधु खोजने में- इंटरनेट एक बड़ा मददगार साबित हुआ। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के सहारे नेट आधारित निजी रिश्तों की दुनिया में नये रूपों का समावेश हुआ।

बोध प्रश्न 1

1. प्रारंभिक हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों की जानकारी दीजिए।

.....
.....
.....

2. भारतीय पत्रकारिता के विकास के द्वितीय चरण के विविध आयामों का परिचय दीजिए।

.....
.....
.....

.....

1.3 भारतीय भाषाओं और हिंदी में पत्रकारिता का विकास

.....

हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी है। हिन्दी पत्रकारिता के आदि उन्नायक जातीय चेतना , युगबोध और अपने महत् दायित्व के प्रति पूर्ण सचेत थे। कदाचित् इसलिए विदेशी सरकार की दमन नीति- का उन्हें शिकार होना पड़ा था , उसके नृशंस व्यवहार की यातना झेलनी पड़ी थी। उन्नीसवीं शताब्दी में हिन्दी गद्यप्रचार-निर्माण की चेष्ठा और हिन्दी-आन्दोलन अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में भयंकर कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कितना तेज और पुष्ट था इसका साक्ष्य 'भारतमित्र' (सन् 1878 ई, में('सार सुधानिधि' (सन् 1879 ई और (.'उचित वक्ता' (सन् 1880 ईके जीर्ण (. पृष्ठों पर मुखर है।

वर्तमान में हिन्दी पत्रकारिता में अंग्रेजी पत्रकारिता के दबदबे को खत्म कर दिया है। पहले देश-विदेश में अंग्रेजी पत्रकारिता का दबदबा था लेकिन आज हिन्दी भाषा का झण्डा चंहुदिश लहरा रहा है। 30 मई को 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

भारतीय भाषाओं में पत्रकारिता का आरम्भ और हिन्दी पत्रकारिता

भारतवर्ष में आधुनिक ढंग की पत्रकारिता का जन्म अठारहवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में कलकत्ता, बंबई और मद्रास में हुआ। 1780 ई) में प्रकाशित हिके .Hickey) का कलकत्ता" कदाचित् इस ओर पहला प्रयत्न था। "गज़ट हिंदी के पहले पत्र **उदंत मार्तण्ड** (1826) के प्रकाशित होने तक इन नगरों की ऐंग्लोइंडियन अंग्रेजी पत्रकारिता काफी विकसित हो गई थी।

इन अंतिम वर्षों में फारसी भाषा में भी पत्रकारिता का जन्म हो चुका था। 18वीं शताब्दी के फारसी पत्र कदाचित् हस्तलिखित पत्र थे। 1801 में 'हिंदुस्थान इंटेलिजेंस ओरिऐंटल ऐंथॉलॉजी' (Hindustan Intelligence Oriental Anthology) नाम का जो संकलन प्रकाशित हुआ उसमें उत्तर भारत के कितने ही के उद्धरण थे। "अखबारों"1810 में मौलवी इकराम अली ने कलकत्त से "हिन्दोस्तानी" नामक पत्र छापना प्रारंभ किया। 1816 में गंगाकिशोर भट्टाचार्य ने "बंगाल गजट" का प्रवर्तन किया। यह पहला बंगला पत्र था। बाद में श्रीरामपुर के पादरियों ने प्रसिद्ध प्रचारपत्र) को "समाचार दर्पण"27 मई 1818) जन्म दिया। इन प्रारंभिक पत्रों के बाद 1823 में हमें बँगला भाषा के 'समाचारचंद्रिका' और "संवाद कौमुदी", फारसी उर्दू के "जामे जहाँनुमा" और के "मुंबई समाचार" तथा गुजराती के "शमसुल अखबार" दर्शन होते हैं।

यह स्पष्ट है कि हिंदी पत्रकारिता बहुत बाद की चीज नहीं है। दिल्ली का) "उर्दू अखबार"1833) और मराठी का) "दिग्दर्शन"1837) हिंदी के पहले पत्र "उदंत मार्तंड" (1826) के बाद ही आए। उदंत मार्तंड के संपादक पंडित जुगलकिशोर थे और यह साप्ताहिक पत्र था। पत्र की भाषा पछाँही हिंदी रहती थी, जिसे पत्र के संपादकों ने "मध्यदेशीय भाषा । यह पत्र 1827 में बंद हो गया। उन दिनों सरकारी सहायता के बिना किसी भी पत्र का चलना असंभव था। कंपनी सरकार ने मिशनरियों के पत्र को डाक आदि की सुविधा दे रखी थी , परंतु चेष्टा करने पर भी को यह सुविधा प्राप्त नहीं हो सकी। "उदंत मार्तंड"

हिंदी पत्रकारिता का पहला चरण

1826 ई से .1873 ई तक को हम हिंदी पत्रकारिता का पहला चरण कह सकते हैं। .1873 ई . में भारतेन्दु ने हरिश्चंद्र" की स्थापना की। एक वर्ष बाद यह पत्र "हरिश्चंद्र मैगजीन" चंद्रिका नाम " पत्र "कविवचन सुधा" से प्रसिद्ध हुआ। वैसे भारतेन्दु का1867 में ही सामने आ गया था और उसने पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण भाग लिया था; परंतु नई भाषाशैली का प्रवर्तन 1873 में से "हरिश्चंद्र मैगजीन" ही हुआ। इस बीच के अधिकांश पत्र प्रयोग मात्र कहे जा सकते हैं और उनके पीछे पत्रकला का ज्ञान अथवा नए विचारों के प्रचार की भावना नहीं है। उदंत" मार्तंड के " बाद प्रमुख पत्र हैं :

> बंगदूत (1829), प्रजामित्र (1834), बनारस अखबार (1845), मार्तंड पंचभाषीय (1846), ज्ञानदीप (1846), मालवा अखबार (1849), जगद्दीप भास्कर (1849), सुधाकर (1850), साम्यदंड मार्तंड (1850), मजहरुलसरूर (1850), बुद्धिप्रकाश (1852), ग्वालियर गजेट (1853), समाचार सुधावर्षण (1854), दैनिक कलकत्ता , प्रजाहितैषी (1855), सर्वहितकारक (1855), सूरजप्रकाश (1861), जगलाभचिंतक (1861), सर्वोपकारक (1861), प्रजाहित (1861), लोकमित्र (1835), भारतखंडामृत (1864), तत्वबोधिनी पत्रिका (1865), ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका (1866), सोमप्रकाश (1866), सत्यदीपक (1866), वृत्तांतविलास (1867), ज्ञानदीपक (1867), कविवचनसुधा (1867), धर्मप्रकाश (1867), विद्याविलास (1867), वृत्तांतदर्पण (1867), विद्यादर्श (1869), ब्रह्मज्ञानप्रकाश (1869), अलमोड़ा अखबार (1870), आगरा अखबार (1870), बुद्धिविलास (1870), हिंदू प्रकाश (1871), प्रयागदूत (1871), बुंदेलखंड अखबर (1871), प्रेमपत्र (1872) और बोधा समाचार (1872)।

इन पत्रों में से कुछ मासिक थे, कुछ साप्ताहिक। दैनिक पत्र केवल एक था "समाचार सुधावर्षण " था और कलकत्ता से प्रकाशित (बंगला हिंदी) जो द्विभाषीय होता था। यह दैनिक पत्र 1871

तक चलता रहा। अधिकांश पत्र आगरा से प्रकाशित होते थे जो उन दिनों एक बड़ा शिक्षाकेंद्र था और विद्यार्थीसमाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। शेष ब्रह्मसमाज , सनातन धर्म और मिशनरियों के प्रचार कार्य से संबंधित थे। बहुत से पत्र द्विभाषीय थे और (हिंदी उर्दू) कुछ तो पंचभाषीय तक थे। इससे भी पत्रकारिता की अपरिपक्व दशा ही सूचित होती है। हिंदीप्रदेश के प्रारंभिक पत्रों में) "बनारस अखबार"1845) काफी प्रभावशाली था और उसी की भाषानीति के विरोध में 1850 में तारामोहन मैत्र ने काशी से साप्ताहिक और "सुधाकर"1855 में राजा लक्ष्मणसिंह ने आगरा से "प्रजाहितैषी का प्रकाशन प्रारंभ किया था। राजा शिवप्रसाद का शैली को अपनाता था तो ये दोनों पत्र पंडिताऊ उर्दू भाषा "बनारस अखबार" तत्समप्रधान शैली की ओर झुकते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि 1867 से पहले भाषाशैली के संबंध में हिंदी पत्रकार किसी निश्चित शैली का अनुसरण नहीं कर सके थे। इस वर्ष 'कवि वचनसुधा' का प्रकाशन हुआ और एक तरह से हम उसे पहला महत्वपूर्ण पत्र कह सकते हैं। पहले यह मासिक था, फिर पाक्षिक हुआ और अंत में साप्ताहिक। भारतेन्दु के बहुविध व्यक्तित्व का प्रकाशन इस पत्र के माध्यम से हुआ, परंतु सच तो यह है कि के प्रकाशन "हरिश्चंद्र मैगजीन" (1873) तक वे भी भाषाशैली और विचारों के क्षेत्र में मार्ग ही खोजते दिखाई देते हैं।

हिंदी पत्रकारिता का दूसरा युग : भारतेन्दु युग

हिंदी पत्रकारिता का दूसरा युग 1873 से 1900 तक चलता है। इस युग के एक छोर पर भारतेन्दु का था ओर "हरिश्चंद्र मैगजीन" नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा अनुमोदनप्राप्त ।"सरस्वती" इन27 वर्षों में प्रकाशित पत्रों की संख्या 300-350 से ऊपर है और ये नागपुर तक फैले हुए हैं। अधिकांश पत्र मासिक या साप्ताहिक थे। मासिक पत्रों में निबंध , नवल कथा (उपन्यास), वार्ता आदि के रूप में कुछ अधिक स्थायी संपत्ति रहती थी , परंतु अधिकांश पत्र 10-15 पृष्ठों से अधिक नहीं जाते थे और उन्हें हम आज के शब्दों में "विचारपत्र ही कह सकते हैं। साप्ताहिक " पत्रों में समाचारों और उनपर टिप्पणियों का भी महत्वपूर्ण स्थान था। वास्तव में दैनिक समाचार के प्रति उस समय विशेष आग्रह नहीं था और कदाचित् इसीलिए उन दिनों साप्ताहिक और मासिक पत्र कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे। उन्होंने जनजागरण में अत्यंत महत्वपूर्ण भाग लिया था।

उन्नीसवीं शताब्दी के इन 25 वर्षों का आदर्श भारतेन्दु की पत्रकारिता थी। "कविवचनसुधा")1867), "हरिश्चंद्र मैगजीन) "1874), श्री हरिश्चंद्र चंद्रिका) "1874), बालबोधिनी स्त्रीजन की) पत्रिक, 1874) के रूप में भारतेन्दु ने इस दिशा में पथप्रदर्शन किया था। उनकी टीकाटिप्पणियों से अधिकरी तक घबराते थे और पर रुष्ट होकर काशी के "पंच" के "कविवचनसुधा" मजिस्ट्रेट ने भारतेन्दु के पत्रों को शिक्षा विभाग के लिए लेना भी बंद करा दिया था। इसमें संदेह नहीं कि पत्रकारिता के क्षेत्र भी भारतेन्दु पूर्णतया निर्भीक थे और उन्होंने नए नए पत्रों के लिए प्रोत्साहन

दिया। "हिंदी प्रदीप", "भारतजीवन आदि अनेक पत्रों का नामकरण भी उन्होंने ही किया " था। उनके युग के सभी पत्रकार उन्हें अग्रणी मानते थे।

भारतेन्दु के बाद

भारतेन्दु के बाद इस क्षेत्र में जो पत्रकार आए उनमें प्रमुख थे पंडित रुद्रदत्त शर्मा , (भारतमित्र, 1877), बालकृष्ण भट्ट (हिंदी प्रदीप, 1877), दुर्गाप्रसाद मिश्र (उचित वक्ता, 1878), पंडित सदानंद मिश्र सारसुधानिधि), 1878), पंडित वंशीधर सुधाकर-कीर्त्ति-सज्जन), 1878), बदरीनारायण चौधरी "प्रेमधन" (आनंदकादंबिनी, 1881), देवकीनंदन त्रिपाठी प्रयाग समाचार), 1882), राधाचरण गोस्वामी भारतेन्दु), 1882), पंडित गौरीदत्त (देवनागरी प्रचारक, 1882), राज रामपाल सिंह हिंदुस्तान), 1883), प्रतापनारायण मिश्र (ब्राह्मण, 1883), अंबिकादत्त व्यास, (पीयूषप्रवाह, 1884), बाबू रामकृष्ण वर्मा भारतजीवन), 1884), पं. रामगुलाम अवस्थी शुभचिंतक), 1888), योगेशचंद्र वसु हिंदी बंगवासी), 1890), पंकवि व चित्रकार) कुंदनलाल ., 1891) और बाबू देवकीनंदन खत्री एवं बाबू जगन्नाथदास साहित्य सुधानिधि), 1894)। 1895 ई" में .नागरीप्रचारिणी पत्रिका " का प्रकाशन आरंभ होता है। इस पत्रिका से गंभीर साहित्यसमीक्षा का आरंभ हुआ और इसलिए हम इसे एक निश्चित प्रकाशस्तंभ मान सकते हैं। 1900 ई" में .सरस्वती" और के अवतरण के साथ हिंदी पत्रकारिता के इस दूसरे युग "सुदर्शन" पर पटाक्षेपहो जाता है।

इन 25 वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता अनेक दिशाओं में विकसित हुई। प्रारंभिक पत्र शिक्षाप्रसार और धर्मप्रचार तक सीमित थे। भारतेन्दु ने सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक दिशाएँ भी विकसित कीं। उन्होंने ही "बालाबोधिनी) "1874) नाम से पहला स्त्री पत्-मासिक-र चलाया। कुछ वर्ष बाद महिलाओं को स्वयं इस क्षेत्र में उतरते देखते हैं हरदेवी) "भारतभगिनी " -, 1888), "सुगृहिणीहेमंतकुमारी) ", 1889)। इन वर्षों में धर्म के क्षेत्र में आर्यसमाज और सनातन धर्म के प्रचारक विशेष सक्रिय थे। ब्रह्मसमाज और राधास्वामी मत से संबंधित कुछ पत्र और मिर्जापुर जैसे ईसाई केंद्रों से कुछ ईसाई धर्म संबंधी पत्र भी सामने आते हैं , परंतु युग की धार्मिक प्रतिक्रियाओं को हम आर्यसमाज के और पौराणिकों के पत्रों में ही पाते हैं। आज ये पत्र कदाचित् उतने महत्वपूर्ण नहीं जान पड़ते , परंतु इसमें संदेह नहीं कि उन्होंने हिन्दी की गद्यशैली को पुष्ट किया और जनता में नए विचारों की ज्योति भी। इन धार्मिक वादविवादों के फलस्वरूप समाज के विभिन्न वर्ग और संप्रदाय सुधार की ओर अग्रसर हुए और बहुत शीघ्र ही सांप्रदायिक पत्रों की बाढ़ आ गई। सैकड़ों की संख्या में विभिन्न जातीय और वर्गीय पत्र प्रकाशित हुए और उन्होंने असंख्य जनों को वाणी दी।

आज वही पत्र हमारी इतिहासचेतना में विशेष महत्वपूर्ण हैं जिन्होंने भाषा शैली, साहित्य अथवा राजनीति के क्षेत्र में कोई अप्रतिम कार्य किया हो। साहित्यिक दृष्टि से हिंदी प"्रदीप ")1877), ब्राह्मण)1883), क्षत्रियपत्रिका)1880), आनंदकादंबिनी)1881), भारतेन्दु)1882), देवनागरी प्रचारक)1882), वैष्णव पत्रिका पश्चात् पीयूषप्रवाह), 1883), कवि के चित्रकार)1891), नागरी नीरद)1883), साहित्य सुधानिधि)1894) और राजनीतिक दृष्टि से भारतमित्र)1877), उचित वक्ता)1878), सार सुधानिधि)1878), भारतोदय दैनिक), 1883), भारत जीवन)1884), भारतोदय दैनिक), 1885), शुभचिंतक (1887) और हिंदी बंगवासी)1890) विशेष महत्वपूर्ण हैं। इन पत्रों में हमारे 19वीं शताब्दी के साहित्यरसिकों, हिंदी के कर्मठ उपासकों, शैलीकारों और चिंतकों की सर्वश्रेष्ठ निधि सुरक्षित है। यह क्षोभ का विषय है कि हम इस महत्वपूर्ण सामग्री का पत्रों की फाइलों से उद्धार नहीं कर सके। बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, सदानं मिश्र, रुद्रदत्त शर्मा, अंबिकादत्त व्यास और बालमुकुंद गुप्त जैसे सजीव लेखकों की कलम से निकले हुए न जाने कितने निबंध, टिप्पणी, लेख, पंच, हास परिहास औप स्केच आज में हमें अलभ्य हो रहे हैं। आज भी हमारे पत्रकार उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। अपने समय में तो वे अग्रणी थे ही।

तीसरा चरण : बीसवीं शताब्दी के प्रथम बीस वर्ष

बीसवीं शताब्दी की पत्रकारिता हमारे लिए अपेक्षाकृत निकट है और उसमें बहुत कुछ पिछले युग की पत्रकारिता की ही विविधता और बहुरूपता मिलती है। 19वीं शती के पत्रकारों को भाषाशैलीक्षेत्र में अव्यवस्था का सामना करना- पड़ा था। उन्हें एक ओर अंग्रेजी और दूसरी ओर उर्दू के पत्रों के सामने अपनी वस्तु रखनी थी। अभी हिंदी में रुचि रखनेवाली जनता बहुत छोटी थी। धीरेधीरे- परिस्थिति बदली और हम हिंदी पत्रों को साहित्य और राजनीति के क्षेत्र में नेतृत्व करते पाते हैं। इस शताब्दी से धर्म और समाजसुधार के आंदोलन कुछ पीछे पड़ गए और जातीय चेतना ने धीरे धीरे राष्ट्रीय चेतना का रूप ग्रहण कर- लिया। फलत अधिकांश पत्र :, साहित्य और राजनीति को ही लेकर चले। साहित्यिक पत्रों के क्षेत्र में पहले दो दशकों में आचार्य द्विवेदी द्वारा संपादित "सरस्वती) "1903-1918) का नेतृत्व रहा। वस्तुत इन बीस वर्षों में हिंदी : के मासिक पत्र एक महान साहित्यिक शक्ति के रूप में सामने आए। शृंखलित उपन्यास कहानी के रूप में कई पत्र प्रकाशित हुए जैसे उपन्यास -1901, हिंदी नाविल 1901, उपन्यास लहरी 1902, उपन्याससागर 1903, उपन्यास कुसुमांजलि 1904, उपन्यासबहार 1907, उपन्यास प्रचार 19012। केवल कविता अथवा समस्यापूर्ति लेकर अनेक पत्र उन्नीसवीं शतब्दी के अंतिम वर्षों में निकलने लगे थे। वे चले रहे। समालोचना के क्षेत्र में) "समालोचक"1902) और ऐतिहासिक शोध से संबंधित) "इतिहास"1905) का प्रकाशन भी महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। परंतु

सरस्वती ने के रूप में जो आदर्श रखा था () "मिस्लेनी", वह अधिक लोकप्रिय रहा और इस श्रेणी के पत्रों में उसके साथ कुछ थोड़े ही पत्रों का नाम लिया जा सकता है, जैसे "भारतेन्दु")1905), नागरी हितैषिणी पत्रिका , बाँकीपुर (1905), नागरीप्रचारक)1906), मिथिलामिहिर)1910) और इंदु)1909)। "सरस्वती दोनों हिन्दी की साहित्यचेतना के इतिहास "इंदु" और " के लिए महत्वपूर्ण हैं और एक तरह से हम उन्हें उस युग की साहित्यिक पत्रकारिता का शीर्षमणि कह सकते हैं। के माध्यम से आचार्य "सरस्वती" महावीरप्रसाद द्विवेदी और के "इंदु" माध्यम से पंडित रूपनारायण पांडेय ने जिस संपादकीय सतर्कता, अध्यवसाय और ईमानदारी का आदर्श हमारे सामने रखा वह हिन्दी पत्रकारिता को एक नई दिशा देने में समर्थ हुआ।

परंतु राजनीतिक क्षेत्र में हिन्दी पत्रकारिता को नेतृत्व प्राप्त नहीं हो सका। पिछले युग की राजनीतिक पत्रकारिता का केंद्र कलकत्ता था। परंतु कलकत्ता हिंदी प्रदेश से दूर पड़ता था और स्वयं हिंदी प्रदेश को राजनीतिक दिशा में जागरूक नेतृत्व कुछ देर में मिला। हिंदी प्रदेश का पहला दैनिक राजा रामपालसिंह का द्विभाषीय) "हिंदुस्तान"1883) है जो अंग्रेजी और हिंदी में कालाकाँकर से प्रकाशित होता था। दो वर्ष बाद)1885 में(, बाबू सीताराम ने नाम "भारतोदय" से एक दैनिक पत्र कानपुर से निकालना शुरू किया। परंतु ये दोनों पत्र दीर्घजीवी नहीं हो सके और साप्ताहिक पत्रों को ही राजनीतिक विचारधारा का वाहन बनना पड़ा। वास्तव में उन्नीसवीं शतब्दी में कलकत्ता के भारत मित्र, वंगवासी, सारसुधानिधि और उचित वक्ता ही हिंदी प्रदेश की रानीतिक भावना का प्रतिनिधित्व करते थे। इनमें कदाचित् ही सबसे "भारतमित्र" अधिक स्थायी और शक्तिशाली था। उन्नीसवीं शताब्दी में बंगाल और महाराष्ट्र लोक जाग्रति के केंद्र थे और उग्र राष्ट्रीय पत्रकारिता में भी ये ही प्रांत अग्रणी थे। हिंदी प्रदेश के पत्रकारों ने इन प्रांतों के नेतृत्व को स्वीकार कर लिया और बहुत दिनों तक उनका स्वतंत्र राजनीतिक व्यक्तित्व विकसित नहीं हो सका। फिर भी हम) "अभ्युदय"1905), "प्रताप) "1913), "कर्मयोगी", "हिंदी केसरी) "1904-1908) आदि के रूप में हिंदी राजनीतिक पत्रकारिता को कई डग आगे बढ़ाते पाते हैं। प्रथम महायुद्ध की उत्तेजना ने एक बार फिर कई दैनिक पत्रों को जन्म दिया। कलकत्ता से "कलकत्ता समाचार", "स्वतंत्रप्रकाशित हुए "विश्वमित्र" और ", बंबई से "वेंकटेश्वर समाचार" ने अपना दैनिक संस्करण प्रकाशित करना आरंभ किया और दिल्ली से निकला। "विजय" 1921 में काशी से प्रकाशित हुए। इस प्रकार हम "वर्तमान" और कानपुर से "आज" देखते हैं कि 1921 में हिंदी पत्रकारिता फिर एक बार करवटें लेती है और राजनीतिक क्षेत्र में अपना नया जीवन आरंभ करती है। हमारे साहित्यिक पत्रों के क्षेत्र में भी नई प्रवृत्तियों का आरंभ इसी समय से होता है। फलत: बीसवीं शती के पहले बीस वर्षों को हम हिंदी पत्रकारिता का तीसरा चरण कह सकते हैं।

आधुनिक युग

1921 के बाद हिंदी पत्रकारिता का समसामयिक युग आरंभ होता है। इस युग में हम राष्ट्रीय और साहित्यिक चेतना को साथ साथ पल्लवित पाते हैं। इसी समय के लगभग हिंदी का प्रवेश विश्वविद्यालयों में हुआ और कुछ ऐसे कृती संपादक सामने आए जो अंग्रेजी की पत्रकारिता से पूर्णत परिचित थे और जो हिंदी : पत्रों को अंग्रेजी, मराठी और बँगला के पत्रों के समकक्ष लाना चाहते थे। फलत साहित्यिक पत्रकारिता में एक नए युग का आरंभ हुआ। राष्ट्रीय आंदोलनों : ने हिंदी की राष्ट्रभाषा के लिए योग्यता पहली बार घोषित की ओर जैसे जैसे- राष्ट्रीय आंदोलनों का बल बढ़ने लगा, हिंदी के पत्रकार और पत्र अधिक महत्व पाने लगे। 1921 के बाद गांधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन मध्यवर्ग तक सीमित न रहकर ग्रामीणों और श्रमिकों तक पहुंच गया और उसके इस प्रसार में हिंदी पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण योग दिया। सच तो यह है कि हिंदी पत्रकार राष्ट्रीय आंदोलनों की अग्र पंक्ति में थे और उन्होंने विदेशी सत्ता से डटकर मोर्चा लिया। विदेशी सरकार ने अनेक बार नए नए कानून बनाकर समाचारपत्रों की स्वतंत्रता पर कुठाराघात किया परंतु जेल , जुर्माना और अनेकानेक मानसिक और आर्थिक कठिनाइयाँ झेलते हुए भी हिन्दी पत्रकारों ने स्वतंत्र विचार की दीपशिखा जलाए रखी।

1921 के बाद साहित्यक्षेत्र में जो पत्र आए उनमें प्रमुख हैं-

> स्वार्थ (1922), माधुरी (1923), मर्यादा, चाँद (1923), मनोरमा (1924), समालोचक (1924), चित्रपट (1925), कल्याण (1926), सुधा (1927), विशालभारत (1928), त्यागभूमि (1928), हंस (1930), गंगा (1930), विश्वमित्र (1933), रूपाभ (1938), साहित्य संदेश (1938), कमला (1939), मधुकर (1940), जीवनसाहित्य (1940), विश्वभारती (1942), संगम (1942), कुमार (1944), नया साहित्य (1945), पारिजात (1945), हिमालय (1946) आदि।

वास्तव में आज हमारे मासिक साहित्य की प्रौढ़ता और विविधता में किसी प्रकार का संदेह नहीं हो सकता। हिंदी की अनेकानेक प्रथम श्रेणी की रचनाएँ मासिकों द्वारा ही पहले प्रकाश में आई और अनेक श्रेष्ठ कवि और साहित्यकार पत्रकारिता से भी संबंधित रहे। आज हमारे मासिक पत्र जीवन और साहित्य के सभी अंगों की पूर्ति करते हैं और अब विशेषज्ञता की ओर भी ध्यान जाने लगा है। साहित्य की प्रवृत्तियों की जैसी विकासमान झलक पत्रों में मिलती है , वैसी पुस्तकों में नहीं मिलती। वहाँ हमें साहित्य का सक्रिय, सप्राण, गतिशील रूप प्राप्त होता है।

राजनीतिक क्षेत्र में इस युग में जिन पत्रपत्रिकाओं की धूम रही वे हैं -

कर्मवीर (1924), सैनिक (1924), स्वदेश (1921), श्रीकृष्णसंदेश (1925), हिंदूपंच (1926), स्वतंत्र भारत (1928), जागरण (1929), हिंदी मिलाप (1929), सचित्र दरबार (1930), स्वराज्य (1931), नवयुग (1932), हरिजन सेवक (1932), विश्वबंधु (1933), नवशक्ति (1934), योगी (1934), हिंदू (1936), देशदूत (1938), राष्ट्रीयता (1938), संघर्ष (1938), चिनगारी (1938), नवज्योति (1938), संगम (1940), जनयुग (1942), रामराज्य (1942), संसार (1943), लोकवाणी (1942), सावधान (1942), हुंकार (1942) और सन्मार्ग (1943), जनवार्ता (1972)।

इनमें से अधिकांश साप्ताहिक हैं , परंतु जनमन के निर्माण में उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा है। जहाँ तक पत्र कला का संबंध है वहाँ तक हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि तीसरे और चौथे युग के पत्रों में धरती और आकाश का अंतर है। आज पत्रसंपादन वास्तव में उच्च कोटि की कला है। राजनीतिक पत्रकारिता के क्षेत्र में) "आज"1921) और उसके संपादक स्वर्गीय बाबूराव विष्णु पराड़कर का लगभग वही स्थान है जो साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी को प्राप्त है। सच तो यह है कि ने पत्रकला के "आज" क्षेत्र में एक महान संस्था का काम किया है और उसने हिंदी को बीसियों पत्रसंपादक और पत्रकार दिए हैं।

आधुनिक साहित्य के अनेक अंगों की भाँति हिन्दी पत्रकारिता भी नई कोटि की है और उसमें भी मुख्यत हमारे मध्यवित्त वर्ग की सामाजिक :, सांस्कृतिक, साहित्यिक औ राजनीतिक हलचलों का प्रतिबिंब भास्वर है। वास्तव में पिछले 200 वर्षों का सच्चा इतिहास हमारी पत्रपत्रिकाओं से ही संकलित हो सकता है। बँगला के ग्रंथ में पत्रों के अवतरणों के "कलेर कथा" आधार पर बंगाल के उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यवित्तीय जीवन के आकलन का प्रयत्न हुआ है। हिंदी में भी ऐसा प्रयत्न वांछनीय है। एक तरह से उन्नीसवीं शती में साहित्य कही जा सकनेवाली चीज बहुत कम है और जो है भी, वह पत्रों के पृष्ठों में ही पहले पहल सामने आई है।- भाषाशैली के निर्माण और जातीय शैली के विकास में पत्रों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, परंतु बीसवीं शती के पहले दो दशकों के अंत तक मासिक पत्र और साप्ताहिक पत्र ही हमारी साहित्यिक प्रवृत्तियों को जन्म देते और विकसित करते रहे हैं। द्विवेदी युग के साहित्य को हम में जिस प्रयोगात्मक रूप में देखते "इंदु" और "सरस्वती" हैं, वही उस साहित्य का असली रूप है। 1921 ईके बाद साहित्य बहुत कुछ . पत्रपत्रिकाओं से स्वतंत्र होकर अपने पैरों पर खड़ा होने लगा, परंतु फिर भी विशिष्ट साहित्यिक आंदोलनों के लिए हमें मासिक पत्रों के पृष्ठ ही उलटने पड़ते हैं। राजनीतिक चेतना के लिए तो पत्रपत्रिकाएँ हैं ही। वस्तुत : पत्रपत्रिकाएँ जितनी बड़ी जनसंख्या को छूती हैं, विशुद्ध साहित्य का उतनी बड़ी जनसंख्या तक पहुँचना असंभव है।

1990 के बाद

90 के दशक में भारतीय भाषाओं के अखबारों , हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में अमर उजाला , दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण आदि के नगरों कस्बों से कई- संस्करण निकलने शुरू हुए। जहां पहले महानगरों से अखबार छपते थे, भूमंडलीकरण के बाद आयी नयी तकनीक, बेहतर सड़क और यातायात के संसाधनों की सुलभता की वजह से छोटे शहरों, कस्बों से भी नगर संस्करण का छपना आसान हो गया। साथ ही इन दशकों में ग्रामीण इलाकों , कस्बों में फैलते बाजार में नयी वस्तुओं के लिए नये उपभोक्ताओं की तलाश भी शुरू हुई। हिंदी के अखबार इन वस्तुओं के प्रचार प्रसार का एक जरिया बन कर उभरा है। साथ ही साथ अखबा-रों के इन संस्करणों में स्थानीय खबरों को प्रमुखता से छापा जाता है। इससे अखबारों के पाठकों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है। मीडिया विशेषज्ञ सेवंती निनान ने इसे 'हिंदी की सार्वजनिक दुनिया का पुनर्विष्कार' कहा है। वे लिखती हैं , “प्रिंट मीडिया ने स्थानीय घटनाओं के कवरेज द्वारा जिला स्तर पर हिंदी की मौजूद सार्वजनिक दुनिया का विस्तार किया है और साथ ही अखबारों के स्थानीय संस्करणों के द्वारा अनजाने में इसका पुनर्विष्कार किया है।

1990 में राष्ट्रीय पाठक सर्वेक्षण की रिपोर्ट बताती थी कि पांच अगुवा अखबारों में हिन्दी का केवल एक समाचार पत्र हुआ करता था। पिछले ने साबित कर दिया कि हम कितनी तेजी (सर्वे) से बढ़ रहे हैं। इस बार)2010सबसे अधिक पढ़े जाने वाले पांच अखबारों में शुरू (के चार हिंदी के हैं।

एक उत्साहजनक बात और भी है कि आईआरएस सर्वे में जिन 42 शहरों को सबसे तेजी से उभरता माना गया है , उनमें से ज्यादातर हिन्दी हृदय प्रदेश के हैं। मतलब साफ है कि अगर पिछले तीन दशक में दक्षिण के राज्यों ने विकास की जबरदस्त पींगें बढ़ाईं तो आने वाले दशक हम हिन्दी वालों के हैं। ऐसा नहीं है कि अखबार के अध्ययन के मामले में ही यह प्रदेश अगुवा साबित हो रहे हैं। आईटी इंडस्ट्री का एक आंकड़ा बताता है कि हिन्दी और भारतीय भाषाओं में नेट पर पढ़नेलिखने वालों की तादाद लगातार बढ़ रही है।-

मतलब साफ है। हिन्दी की आकांक्षाओं का यह विस्तार पत्रकारों की ओर भी देख रहा है। प्रगति की चेतना के साथ समाज की निचली कतार में बैठे लोग भी समाचार पत्रों की पंक्तियों में दिखने चाहिए। पिछले आईएएस, आईआईटी और तमाम शिक्षा परिषदों के परिणामों ने साबित कर दिया है कि हिन्दी भाषियों में सबसे निचली सीढ़ियों पर बैठे लोग भी जबरदस्त उछाल के लिए तैयार हैं। हिन्दी के पत्रकारों को उनसे एक कदम आगे चलना होगा ताकि उस जगह को फिर से हासिल सकें, जिसे पिछले चार दशकों में हमने लगातार खोया।

भारत में इलेक्ट्रोनिक मीडिया पिछले 15-20 वर्षों में घर घर में पहुँच गया है फिर चाहे वह शहर हो या ग्रामीण क्षेत्र। इन शहरों और कस्बों में केबिल टीवी से सैकड़ो चैनल दिखाए जाते हैं। एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार भारत के कम से कम 80 प्रतिशत परिवारों के पास अपने टेलीविजन सेट हैं और मेट्रो शहरों में रहने वाले दो तिहाई लोगों ने अपने घरों में केबल कनेक्शन लगा रखे हैं। इसके साथ ही शहर से दूर-दराज के क्षेत्रों में भी लगातार डीटीएच-डायरेक्ट टु होम सर्विस का विस्तार हो रहा है।

प्रारम्भ में केवल फिल्मी क्षेत्रों से जुड़े गीत , संगीत और नृत्य से जुड़ी प्रतिभाओं के प्रदर्शन का माध्यम बना एवं लंबे समय तक बना रहा , इससे ऐसा लगने लगा कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सिर्फ़ फिल्मी कला क्षेत्रों से जुड़ी प्रतिभाओं के प्रदर्शन के मंच तक ही सिमटकर रह गया है , जिसमे नैसर्गिक और स्वाभाविक प्रतिभा प्रदर्शन के अपेक्षा नक़ल को ज्यादा तवज्जो दी जाती रही है। कुछ अपवादों को छोड़ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की यह नई भूमिका अत्यन्त प्रशंसनीय और सराहनीय है, जो देश की प्रतिभाओं को प्रसिद्धि पाने और कला एवं हुनर के प्रदर्शन हेतु उचित मंच और अवसर प्रदान करने का कार्य कर रही है।

आजादी के बाद हिंदी पत्रकारिता व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के नवनिर्माण के प्रति प्रतिबद्ध हुई। उद्बोधन, जागरण, क्रांति के पश्चात पत्रकारिता ने व्यक्तित्व निर्माण करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। हिंदी भाषा को माध्यम बनाकर करोडो निरन्न , निर्वस्त्र नागरिकों का लेखा-जोखा शंखनाद के साथ प्रस्तुत करने में पत्रकार सफल हुए। राष्ट्र के नवनिर्माण हेतु पत्रकारों की परंपरा ने राजनेताओं का पथ प्रदर्शन किया। नया आत्मबोध, नई चिंतनधारा, नूतन रचनात्मक तत्वों के व्यापक प्रचार-प्रसार का कार्य करनेवाली हिंदी पत्रकारिता को बल देने का महत्त्वपूर्ण कार्य 'सूचना प्रौद्योगिकी' ने किया। इसे मानना होगा। हिंदी पत्रकारिता के साथ-साथ हिंदी भाषा विकास में दूरदर्शन, सिनेमा, आकाशवाणी, इंटरनेट आदि आधुनिक जनसंचार माध्यमों की भूमिका प्रभावकारी रही है। इसे नकारा नहीं जा सकता।

बोध प्रश्न 2

1. हिंदी पत्रकारिता के प्रारंभिक चरण की संक्षिप्त जानकारी प्रदान कीजिए।

.....

.....

.....

2. आधुनिक युग में हिंदी की राजनीतिक क्षेत्र की पत्र-पत्रिकाओं की जानकारी प्रदान कीजिए।

.....

.....

.....

1.4 सूचना प्रौद्यौगिकी और जनसंचार

.....

समकालीन युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। ' सूचना विस्फोट ' के इस युग में 'इंटरनेट ' की भूमिका महत्त्वपूर्ण और सर्वव्यापी परिलक्षित होती है। अतः हिंदी भाषा विकास में आधुनिक संचार माध्यम के रूप में 'इंटरनेट' का स्थान नवीनतम प्रणाली के रूप में महत्त्वपूर्ण बनता नजर आ रहा है। "भाषा एक दैवी शक्ति है जो मानव को मानवता प्रदान करती है। भावों को प्रकट करने, विचारों को बोधगम्य बनाने तथा परस्पर व्यवहार बढ़ाने का यही एक विश्वव्यापी और सशक्त माध्यम है। वास्तव में भाषा के अभाव में मूक प्राणी निरीह बना रहता है , विचार बहरे हो जाते हैं और व्यवहार लंगडे बनकर रह जाते हैं। भाषा के कारण ही मानव सुसंस्कृत होता है , सम्मान और यश का भागी बनता है। ... मौखिक और लिखित संचार-साधनों में अरबी, अंग्रेजी, इतावली, उर्दू, चीनी परिवार की भाषाएँ जर्मन, जापानी, तमिल, तेलगु, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, बंगला, मलय-बहरसा, रुसी, स्पेनी तथा हिंदी ये 16 प्रमुख भाषाएँ हैं। गौरव की बात तो यह है कि इनमें सम्मिलित 5 भाषाएँ अपने भारत राष्ट्र की हैं। चीनी और अंग्रेजी भाषा के बाद हिंदी ही विश्व की प्रमुख भाषा है, जो स्वतंत्रता तथा सम्प्रभुता की अमरवाणी है।... हिंदी मानव के बुद्धि-कौशल, विवेक, चिंतन, आचार-व्यवहार तथा संस्कृति की भाषा है। "1 अतः हिंदी भाषा को कंप्यूटर के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाने का विचार सामने आया। " सन 1946" 2 कंप्यूटर का जन्म वर्ष माना जाता है। गुणात्मक कार्य के कारण कंप्यूटर वर्तमान युग में आवश्यक एवं व्यापक कार्यक्षेत्र वाला माध्यम बना है। इसे मानना होगा। कंप्यूटरों के माध्यम से तमाम इंटरनेट सेवाएँ अपना महत्त्व बढ़ा रही है। इंटरनेट की हिंदी भाषा विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही दृष्टिगोचर होती है। इंटरनेट की आवश्यकता और महत्व को बताने से पहले जनसंचार माध्यमों के क्रम में 'इंटरनेट' का स्थान निश्चित करना आवश्यक है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि समकालीन युग में अपना विशेष प्रभाव बनाएँ रखनेवाले न्यू इलैक्टॅनिक जनसंचार माध्यमों में 'इंटरनेट' (आन्तरिक संजाल) प्रभावी बन रहा है। अतः इंटरनेट, इंटरलिंक (Internet, Interlink) का इतिहास जानना आवश्यक है। "इंटरनेट का बीजारोपण सन 1969 में अमरीका की प्रतिरक्षा विभाग ARPA (Advanced Research Project Agency) के शोध कार्यक्रम के क्रियान्वयन से हुआ , जिसका उद्देश्य एक ऐसी तकनीक का विकास करना था जिसके कारण अलग-अलग कंप्यूटरों के मध्य एक सुरक्षित कम्युनिकेशन संभव हो सके , जिससे विभिन्न प्रकार के नेटवर्क को एक दूसरे से जोड़ा जा सके। इससे नेटवर्क की विश्वसनीयता बढ़ जायेगी। उपरोक्त नेटवर्क को (ARPANET) नाम

दिया गया। प्रारंभ में इसका उपयोग केवल रक्षा संबंधी जरुरतों के लिए किया गया परंतु बाद में रक्षा संबंधी मामलों में शोध कर रहे संस्थानों व विश्वविद्यालयों को भी इस नेटवर्क से जोड दिया गया इस नेटवर्कों के नेटवर्क को इंटनेट (Internet) नाम दिया गया। यह TCP/IP (Transmission Control Procedure/Internet Protocol) अमेरिक न सुरक्षा विभाग द्वारा विकसित एक नेटवर्क में सहायक उपकरण पर आधारित है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इंटरनेट का कनेक्शन सन 1973 में इंग्लैण्ड और नार्वे के मध्य स्थापित किया गया। भारत में पहला इंटरनेट कनेक्शन प्रयोग करने वाला संस्थान था नई दिल्ली स्थित नेशनल इन्फोर्मेटिक सेंटर (NIC)। भारत में व्यावसायिक रुप से प्रथम इंटरनेट सेवा 1995-96 में भारत सरकार के उपक्रम विदेश संचार निगम लिमिटेड (VSNL) ने की।''3 समकालीन युग का अध्ययन किया जाय तो आधुनिक जनसंचार माध्यमों में (श्रव्य दृश्य माध्यम) पिछलग्गू (Satellite) का उपयोग बढ़ता हुआ दृष्टिगोचर होता है। अब हिंदी पत्र-पत्रकाएँ एवं विभिन्न पुस्तकें भी इंटरनेट के माध्यम से पढ़ने के लिए उपलब्ध है। अतः आधुनिक जन-संचार का यह माध्यम वैश्विकरण में हिंदी भाषा को सशक्त बनाता हुआ परिलक्षित होता है।

इंटरनेट के माध्यम से जिस हिंदी भाषा को हम पढ़ते है वह 'रिमिक्स भाषा ' (Remix Language) के रूम में सामने आ रही है। 'कंप्यूटर शब्दकोश' देखेंगे तो अनेक अंग्रेजी शब्दों के लिए हिंदी शब्द मिल नहीं रहे हैं। इसे मानना होगा। जैसे - ''ATM - का अर्थ हैं ऑटोमेटिक टेलर मशीन। इस मशीन का प्रयोग बैंको में किया जाता है। इसकी सहायता से मशीन से धन-निकाशी की जाती है। ATM- का एक और अर्थ है Adobe Type Manager यह सॉफ्टवेअर विंडोज में प्रयोग किए जानेवाले टाईप फेसों को इंस्टाल करता है।''4 ATM- के लिए हिंदी शब्द देना नयी आधुनिक सूचना संचार प्रौद्योगिकी के कारण असंभव बन रहा है। इंटरनेट द्वारा हिंदी भाषा का नया रूप सामने आ रहा है। इस रूप का अनेक जगहों पर स्वागत हो रहा है तो कहीं विरोध। अतः भूमंडलीकरण के इस दौर में हिंदी का चेहरा बदल रहा है। इसे मानना होगा। कृष्ण कुमार रत्तू हिंदी भाषा का वैश्वीकृत बाजारमूलक चेहरा स्पष्ट करते हुए कहते हैं - '' हिंदी के इस बदलते स्वरुप में जहाँ प्रयोजन मूलकता का व्याकरणीय तत्वबोध इसके सौंदर्य में बढोतरी करता है वहीं कुछ विद्वानों द्वारा हिंदी भाषा को नष्ट करने की संज्ञा भी दी जा रही है। हिंदी का यह चेहरा हिंग्लेजी, हिंगलिश मिश्रित हिंदी अथवा बिगडी हुई हिंदी का है।

कालचक्र जिस तरह से राजनीतिक सामाजिक बदलाव की और अग्रेसर है उसमें भाषायी समरसता समूचे विश्व में बहस का मुद्दा हो गई है। समूचे विश्व में भाषा भौगोलिक सीमाएँ तोड रही है। स्पष्ट उदाहरण तौर पर जिस तरह से अंग्रेजी व अन्य यूरोपीय भाषाओं में नए शब्दों को

खुले मन से समाहित किया जा रहा है , उसी तरह ही हिंदी भाषा भी अब इस स्वरुप का अपवाद नहीं रह गई है। हिंदी में भी हर भाषा के ज्यादा तर अंग्रेजी के शब्दों को ज्यों का त्यों लिया जा रहा है। उदाहरण के तौर पर देश के बडे मिडिया परिदृश्य पर एक नजर डालनी होंगी।''5 इंटरनेट जैसा पिछलग्गू (Satellite) आधुनिक संचार माध्यम भी 'रिमिक्स भाषा' से अछूता नही रह सका। हिंदी भाषा का यह रिमिक्स भाषायी आयाम अनेक प्रश्नों को, विवादों को जन्म तो दे रहा है , साथ ही साथ हिंदी भाषा का यह चेहरा बदलते तकनीकी जगतमें अपनी अलग पहचान बनाने में सफल हुआ है। इसे नकारा नही जा सकता।

इंटरनेट संचार-प्रक्रिया में अपनी विशेष भूमिका निभाता है। हिंदी भाषा के प्रसार- प्रचार में भी 'इंटरनेट' का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा दृष्टिगोचार होता है। 'संचार' शब्द को परिभाषित करते हुए डॉ. हरिमोहन लिखते हैं '' संचार एक जटिल प्रक्रिया का परिणाम है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच अर्थपूर्ण संदेशो (Meaningful Message) का आदान-प्रदान किया जाता है। ये अर्थपूर्ण संदेश भेजनेवाले और संदेश पानेवालों के बीच एक समझदारी या साझेदारी बनाते हैं।''6 कहना सही होगा कि संचार प्रक्रिया में अर्थपूर्ण विचारों का आदान-प्रदान करने हेतु 'इंटरनेट' का सही उपयोग हो रहा है। 'इंटरनेट' के माध्यम से देवनागरी में यांत्रिक सुविधाओं तथा नवीनतम द्विभाषी शब्द संसाधक प्रणाली का विकास हो रहा है। विंडोज पर आधारित देवनागरी फॉण्ट उपलब्ध हो रहें हैं। अक्षरा-11, मल्टीवर्ड, शब्दमाला, शब्दरत्न सुपर, अलिशा, ए.एल.पी, विजन, वर्डसवर्थ, भाषा, शब्द सम्राट , आकृति आदि द्विभाषी शब्द संसाधकों की जानकारी इंटरनेट के माध्यम से हिंदी प्रेमियों को मिलने के कारण हिंदी भाषा विकास को नई दिशा मिल रही है। 'इंटरनेट टेलीफोनी' के माध्यम से भी प्रचुर मात्रा में हिदीं भाषा का प्रचार-प्रसार विदेशों में हो रहा है। साहित्यकारों के लिए अधिकतम ज्ञान प्राप्त् करने हेतु इंटरनेट उपयुक्त सिद्ध हो रहा है। विभिन्न भारतीय भाषाओं का साहित्य हिंदी के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाने का कार्य इंटरनेट के माध्यम से सुविधाजनक हो रहा है। इंटरनेट पर साहित्य , शब्दकोश, संगीत, इतिहास आदि विभिन्न विषयों की जानकारी होने के कारण अनुसंधाताओं को विचारों का आदान-प्रदान करने में सफलता मिल रही है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा के अनुसंधानात्मक विकास में, अनुसंधान क्षेत्र को नई दिशा देने में 'इंटरनेट' की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही दृष्टिगोचर होती है। '' इंटरनेट के माध्यम से मानव के ज्ञान में तीव्रता से वृद्धि होती है। इंटनेट पर एक सवाल का जवाब खोजने के सिलसिले में कई दूसरे तरह का ज्ञान भी प्राप्त् हो जाता है , जो अचानक ही खोज के दौरान जाहिर होते है। इंटरनेट की भाषा में इसे 'सिरेनडियिटी' आकस्मिक लाभवृत्ति कहा जाता है। ''7 हिंदी भाषा के विकास में इस आकस्मिक लाभवृत्ति का उपयोग हो रहा है। हिंदी पारिभाषिक शब्दों को सी खने हेतु अब

इंटरनेट का प्रयोग हो रहा है भले ही यह पारिभाषिक शब्दावली हिंदी व्याकरण के नियम तोड रही हो, इसमें अंग्रेजी शब्दों का प्राचुर्य हो, फिर भी 'इंटरनेट ' के माध्यम से हिंदी का जो सर्वथा भिन्न रूप सामने आ रहा है। इस रूप को हिंदी पाठक अपना रहा है।

समकालीनता का विचार किया जाय तो इंटरनेट के प्रति लोंगों का आकर्षण दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। उपयोगकर्ताओं को जिन शब्दों में 'ज्ञान' की आवश्यकता है , उन्हीं शब्दों में ज्ञान दिया जा रहा है और यह ज्ञान प्रचलित शब्दों में होने के कारण ससमकालीन पीढी इंटरनेट की 'भाषा' पर आपत्ति नही उठा रही है। अतः इंटरनेट पर आ रही हिंदी भाषा पर विवाद उठाने के बजाय इंटरनेट के लिए 'व्यावसायिक उद्देश्य ' पूरा करनेवाले हिंदी शब्दों का निर्माण करना हिंदी भाषा की पुरानी इंटरनेटीय दशा बदलकर नई दिशा देना जैसा होगा। समकालीन पीढी के हिंदी प्रेमीयों को इस दिशा में अग्रेसित होना चाहिए। वर्तमान समय में हमें इंटरनेट के लिए 'स्वतंत्र हिंदी भाषा' का निर्माण करना होगा। अतः हिंदी शब्दों का मानकीकृत रूप इंटरनेट में लाने के लिए व्यापक स्तर पर अनुसंधान होना अनिवार्य है। डॉ.अवधेश प्रसाद सिंह कहते हैं - ''लाइनक्स नामक एक नया ऑपरेटिंग सिस्टम इसी दिशा में एक अधुनातन पहल है। यह उपयोगकर्ताओं को अपनी आवश्यकता के अनुसार इंटरनेट के उपयोग की सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास कर रहा है। यह इंट रनेट पर अंतक्रिया करनेवाले हजारों प्रोग्रामरों का सहयोगात्मक प्रयास है , जिसमें तकनीकी शब्दों का ही नहीं आम जीवन के शब्दों को भी एक मानक रूप देकर प्रचलित करने की चेष्टा की जा रही है। कहने का तात्पर्य यह कि यदि हिंदी शब्दों और उसके रूपों को मानकीकृत करने का काम हिंदीवालों द्वारा नही किया जाता है तो ऐसा नही है कि यह काम रूका रहेगा। बहुराष्ट्रीय कंपनियां इस काम को अपने हाथ में ले लेंगी, आयोग बनाएंगी , तंत्र विकसित करेंगी और हिंदी जगत के सक्षम एक बनी-बनाई भाषा परोस देंगी। ऐसा वे हिंदी के प्रति स्नेह के आवेश में नही बल्कि अपना माल बेचने के लिए करेंगी। उनकी आँखो के सामने हिंदी क्षेत्र का एक बहुत बडा बाजार फैला है , जिस पर कब्जा किए बिना उनका व्यावसायिक उद्देश पूरा नही होगा। ''8 कहना आवश्यक नही कि अपना व्यावसायिक उद्देश्य पूरा करने के लिए कामचलावू हिंदी को विकसित करने का प्रयास हो रहा है। इसे रोकना होगा। इंटरनेट के लिए 'हिंदी का मानक कोश ' निर्माण करने की जिम्मेदारी समकालीन पीढी की है। अतः इस ओर निर्णायक कदम उठाने होंगे। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय , भारत सरकार द्वारा प्रमोचित हिंदी सॉफ्टवेयर उपकरण (Hindi Software Tools) विकसित किया गया है , जिसमें हिंदी भाषा के यूनीकोड आधारित ओपन टाईप फॉन्टस् , कीबोर्ड, डईवर, हिंदी भाषा के शब्द-वर्तनी जाँचकर्ता, हिंदी, भाषा का शब्दानुवाद टूल आदि विषयों की जानकारी प्राप्त् होती है।

इंटरनेट संसाधित भाषा शिक्षण को बढावा देने में भारत सरकार द्वारा हुआ यह प्रयास महत्त्वपूर्ण माना जाता है। फिर भी भाषा अध्यापक के लिए कंप्यूटर के माध्यम से भाषा सिखाना आज भी कठिन कार्य बना है। भाषा शिक्षण के लिए आवश्यक हार्डवेअर और सॉफ्टवेअर की उपलब्धता आज भी आवश्यकता के अनुसार नहीं हो रही है। इस स्थिति को नकारा नही जा सकता। " कंप्यूटर द्वारा गणित, भौतिकी, रसायनशास्त्र आदि विषय सिखाना सरल है क्योंकि इन विषयों में किसी भी अध्यापक द्वारा पढाई जानेवाली सामग्री प्रायः पूर्वनिर्धारित होती है। उसके प्रस्तुतीकरण का तरीखा मात्र बदल जाता है। पर कं प्यूटर के द्वारा भाषा सिखाना एक अत्यधिक जटिल कार्य है। भाषा सिखाना वास्तव में कौशल सिखाना है। लिखना व पढना जैसा गौण कौशल अथवा नियमों पर आधारित व्याकरण आदि जैसा विषय तो फिर भी आधारभूत मूल। सामान्य कंप्यूटर से सिखाए जा सकते हैं , पर मौखिक और श्रवण कौशल सिखाना असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य है। "9 वर्तमान समय का विचार किया जाय तो वर्तनीशोधक , कंप्यूटर कोश रुपात्मक और वाक्यात्मक विश्लेषक , स्पीच सिंथे साइजर , रिकगनाइजर, डिकोटर आदि की उपलब्धता के कारण इंटरनेट के माध्यम से हिंदी भाषा शिक्षण सुदूर पहुँच रहा है। भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में बदलाव नजर आ रहा है। इंटरनेट में दिन-ब-दिन बदलाव , भाषाई सुधार होकर हिंदी भाषा शिक्षण पिछडी दशा से उभरकर नई दिशा की और अग्रेसित हो रहा है। इसे हमे माना होगा। भूत-पूर्व राष्ट्पति प्रख्यात वैज्ञानिक ए.पी.जे.अब्दुल कलाम जी कहते हैं- " टेक्नॉलॉजी विज्ञान से भिन्न एक सामूहिक गतिविधि है। यह किसी एक व्यक्ति की बुद्धि या समज पर आधारित नहीं होती बल्कि कई व्यक्तियो की आपसी बौद्धिक प्रतिभा पर आधारित होती है। "10 हिंदी भाषा के विकास हेतु नवीनतम टेक्नॉलॉजी विज्ञान के साथ सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है।

अखिल भारतीय स्तर पर यह प्रयास होना जरुरी है कि हिंदी भाषा को व्यवहार एवं प्रयोग के स्तर पर सार्वदेशिक बनाया जाय। अतः यह बात तब संभव है जब समकालीन पीढी इंटरनेट के माध्यम से हिंदी भाषा शिक्षण को नई दिशा दें। हिंदी के विकास की यह प्रक्रिया जितनी तेज रफ्तार से हो उतना ही हमारा और हमारे देश का विकास होगा। इंटरनेट के माध्यम से हिंदी भाषा को वैज्ञानिक, तकनीकी, यांत्रिकी, प्रौद्योगिकी आदि विषयों के साथ जोडकर हिंदी भाषा की सुदीर्घ परंपरा को और अधिक समृद्ध बनाना होगा। समकालीन पीढी के कंप्यूटरविज्ञ तथा भाषाविज्ञ दोनों को एक साथ मिलकर हिंदी भाषा विकास मे ' इंटरनेट' जैसे आधुनिक जनसंचार माध्यम की भूमिका को ध्यान में रखकर निरंतर कार्यरत रहना होगा। तभी हिंदी भाषा के विकास में 'इंटरनेट' के माध्यम से नई दिशा प्राप्त् होगी। इसमें दो राय नही।

बोध प्रश्न 3

1. संचार माध्यम के रूप में इंटरनेट के प्रारंभिक इतिहास का संक्षेप में वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

1.5 सोशल मीडिया

.....

जब से समाज की स्थापना हुई है तब से मनुष्य समाज में रहने वाले अन्य लोगों के साथ निरंतर संपर्क साधता रहता है। इसी संपर्क साधने की प्रक्रिया में विकास के चलते नई खोज हुई और सोशल नेटवर्किंग साइट्स अस्तित्व में आई। इन साइट्स के जरिए लोग एक दूसरे से संपर्क स्थापित करते हैं। युवा पीढ़ी के लिए यह जानकारी प्राप्त करने , मनोरंजन तनाव से मुक्त रहने, नए लोगों से पहचान बनाने का साधन बन गया है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर वह अपनी बात अपने संपर्क के लोगों के साथ सांझा करते हैं। **आज के अत्याधुनिक युग में सोशल मीडिया पर चर्चा किए बिना जनसंचार के सभी आयामों को जान पाना संभव नहीं है। सामाजिक मीडिया** पारस्परिक संबंध के लिए अंतर्जाल या अन्य माध्यमों द्वारा निर्मित आभासी समूहों को संदर्भित करता है। यह व्यक्तियों और समुदायों के साझा , सहभागी बनाने का माध्यम है। इसका उपयोग सामाजिक संबंध के अलावा उपयोगकर्ता सामग्री के संशोधन के लिए उच्च पारस्परिक प्लेटफार्म बनाने के लिए मोबाइल और वेब आधारित प्रौद्योगिकियों के प्रयोग के रूप में भी देखा जा सकता है।

स्वरूप

सामाजिक मीडिया के कई रूप हैं जिनमें कि इन्टरनेट फोरम, वेबलॉग, सामाजिक ब्लॉग, माइक्रोब्लागिंग, विकीज, सोशल नेटवर्क , पॉडकास्ट, फोटोग्राफ, चित्र, चलचित्र आदि सभी आते हैं। अपनी सेवाओं के अनुसार सोशल मीडिया के लिए कई संचार प्रौद्योगिकी उपलब्ध हैं।

सोशल मीडिया के निम्नलिखित प्रकार रेखांकित किए जा सकते हैं।

- सहयोगी परियोजना (उदाहरण के लिए, विकिपीडिया)
- ब्लॉग और माइक्रोब्लॉग (उदाहरण के लिए, ट्विटर)
- सोशल खबर नेटवर्किंग साइट्स (उदाहरण के लिए डिग और लेकरनेट)
- सामग्री समुदाय (उदाहरण के लिए, यूट्यूब और डेली मोशन)
- सामाजिक नेटवर्किंग साइट (उदाहरण के लिए, फेसबुक)
- आभासी खेल दुनिया (जैसे, वर्ल्ड ऑफ़ वॉरक्राफ्ट)
- आभासी सामाजिक दुनिया (जैसे सेकंड लाइफ)

अपने शुरूआती दौर में सोशल नेटवर्किंग साइट एक सामान्य सी दिखने वाली साइट होती थी और इसके जरिए उपयोगकर्ता एक-दूसरे से चैटरूम के जरिए बात करते थे और अपनी निजी जानकारी व विचार एक-दूसरे के साथ बांटते थे। इन साइट्स में द वेल, (1985, 'द ग्लोब डाट काम, 1994, ट्राईपोड डाट काम (1995 शामिल थीं। 90 के दशक से इन साइट्स में बदलाव आया और इसमें फोटो , वीडियो, संगीत, शेयरिंग, आनलाइन गेम्स, विज्ञान, कला. ब्लागिंग, चैटिंग, आनलाइन डेटिंग जैसी तमाम सुविधाएं बढ़ीं। भारत में सबसे ज्यादा प्रयोग होने वाली वेबसाइट्स में फेसबुक , ट्विटर व आरकुट शामिल हैं। इसके अलावा हाय फाइव , बेबो, याहू 360, फ्रेंड ज़ोर्पिया आदि कई सोशल नेटवर्किंग साइट उपलब्ध हैं। फेसबुक फरवरी 2004 में लांच हुई थी जिसने बहुत कम समय में युवाओं के बीच पहुंच बनाकर प्रसिद्धि पाई। वहीं आरकुट वर्ष 2004 में बनाई गई थी जिस पर गूगल इंक का स्वामित्व था और फेसबुक के अत्यधिक वर्चस्व के कारण अब वो बंद हो गई है। ट्विटर वर्ष 2006 में जैक डर्सी द्वारा बनाई गई थी। इसके प्रयोगकर्ता अपने एकाउंट से कोई भी संदेश छोड़ते है जिसे ट्वीटर कहा जाता है।

विशेषता

सामाजिक मीडिया अन्य पारंपरिक तथा सामाजिक तरीकों से कई प्रकार से एकदम अलग है। इसमें पहुँच, आवृत्ति, प्रयोज्य, ताजगी और स्थायित्व आदि तत्व शामिल हैं। इन्टरनेट के प्रयोग से कई प्रकार के प्रभाव होते हैं। निएलसन के अनुसार 'इन्टरनेट प्रयोक्ता अन्य साइट्स की अपेक्षा सामाजिक मीडिया साइट्स पर ज्यादा समय व्यतीत करते हैं'।

दुनिया में दो तरह की सिविलाइजेशन का दौर शुरू हो चुका है , वर्चुअल और फिजीकल सिविलाइजेशन। आने वाले समय में जल्द ही दुनिया की आबादी से दो-तीन गुना अधिक आबादी अंतर्जाल पर होगी। दरअसल , अंतर्जाल एक ऐसी टेक्नोलाजी के रूप में हमारे सामने आया है, जो उपयोग के लिए सबको उपलब्ध है और सर्वहिताय है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स संचार व सूचना का सशक्त जरिया हैं , जिनके माध्यम से लोग अपनी बात बिना किसी रोक-टोक के रख पाते हैं। यही से सामाजिक मीडिया का स्वरूप विकसित हुआ है।

व्यापारिक उपयोग

जन सामान्य तक पहुँच होने के कारण सामाजिक मीडिया को लोगों तक विज्ञापन पहुँचाने के सबसे अच्छा जरिया समझा जाता है। हाल ही के कुछ एक सालो में इंडस्ट्री में ऐसी क्रांति देखी जा रही है। फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर उपभोक्ताओं का वर्गीकरण विभिन्न

मानकों के अनुसार किया जाता है जिसमें उनकी आयु , रूचि, लिंग, गतिविधियों आदि को ध्यान में रखते हुए उसके अनुरूप विज्ञापन दिखाए जाते हैं। इस विज्ञापन के सकारात्मक परिणाम भी प्राप्त हो रहे हैं साथ ही साथ आलोचना भी की जा रही है।

समालोचना

सामाजिक मीडिया की समालोचना विभिन्न प्लेटफार्म के अनुप्रयोग में आसानी, उनकी क्षमता, उपलब्ध जानकारी की विश्वसनीयता के आधार पर होती रही है। हालाँकि कुछ प्लेटफॉर्म्स अपने उपभोक्ताओं को एक प्लेटफॉर्म्स से दुसरे प्लेटफॉर्म्स के बीच संवाद करने की सुविधा प्रदान करते हैं पर कई प्लेटफॉर्म्स अपने उपभोक्ताओं को ऐसी सुविधा प्रदान नहीं करते हैं जिससे की वे आलोचना का केंद्र विन्दु बनते रहे हैं। वहीँ बढती जा रही सामाजिक मीडिया साइट्स के कई सारे नुकसान भी हैं। ये साइट्स ऑनलाइन शोषण का साधन भी बनती जा रही हैं। ऐसे कई केस दर्ज किए गए हैं जिनमें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग लोगों को सामाजिक रूप से हनी पहुँचाने, उनकी खिचाई करने तथा अन्य गलत प्रवृत्तियों से किया गया।

सामाजिक मीडिया के व्यापक विस्तार के साथ-साथ इसके कई नकारात्मक पक्ष भी उभरकर सामने आ रहे हैं। पिछले वर्ष मेरठ में हुयी एक घटना ने सामाजिक मीडिया के खतरनाक पक्ष को उजागर किया था। वाकया यह हुआ था कि उस किशोर ने फेसबूक पर एक ऐसी तस्वीर अपलोड कर दी जो बेहद आपत्तीजनक थी, इस तस्वीर के अपलोड होते ही कुछ घंटे के भीतर एक समुदाय के सैकडों गुस्साये लोग सडकों पर उतार आए। जब तक प्रशासन समझ पाता कि माजरा क्या है, मेरठ में दंगे के हालात बन गए। प्रशासन ने हालात को बिगडने नहीं दिया और जल्द ही वह फोटो अपलोड करने वाले तक भी पहुँच गया। लोगों का मानना है कि परंपरिक मीडिया के आपत्तिजनक व्यवहार की तुलना में नए सामाजिक मीडिया के इस युग का आपत्तीजनक व्यवहार कई मायने में अलग है। नए सामाजिक मीडिया के माध्यम से जहां गडबडी आसानी से फैलाई जा सकती है, वहीं लगभग गुमनाम रहकर भी इस कार्य को अंजाम दिया जा सकता है। हालांकि यह सच नहीं है , अगर कोशिश की जाये तो सोशल मीडिया पर आपत्तीजनक व्यवहार करने वाले को पकडा जा सकता है और इन घटनाओं की पुनरावृति को रोका भी जा सकता है। केवल मेरठ के उस किशोर का पकडे जाना ही इसका उदाहरण नहीं है, वल्कि सोशल मीडिया की ही दें है कि लंदन दंगों में शामिल कई लोगों को वहाँ की पुलिस ने पकडा और उनके खिलाफ मुकदमे भी दर्ज किए। और भी कई उदाहरण है जैसे बैंकुअर दंगे के कई अहम सुराग में सोशल मीडिया की बडी भूमिका रही। मिस्र के तहरीर चैक और ट्यूनीशिया के जैस्मिन रिवोल्यूशन में इस सामाजिक मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका को कैसे नकारा जा सकता है।

सामाजिक मीडिया की आलोचना उसके विज्ञापनों के लिए भी की जाती है। इस पर मौजूद विज्ञापनों की भरमार उपभोक्ता को दिग्भ्रमित कर देती है तथा ऐसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स एक इतर संगठन के रूप में काम करते हैं तथा विज्ञापनों की किसी बात की जवाबदेही नहीं लेते हैं जो कि बहुत ही समस्यापूर्ण है।

बोध प्रश्न 4

1 सोशल मीडिया के स्वरूप का संक्षेप में परिचय दीजिए।

.....
.....
.....

2. सोशल मीडिया की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

.....
.....
.....

.....

सारांश

.....

इस इकाई के तहत हमनें चार अध्यायों के अंतर्गत भारत में मीडिया का इतिहास, हिंदी पत्रकारिता की विकासयात्रा, इंटरनेट और जनसंचार तथा सोशल मीडिया के स्वरूप को जाना। इस इकाई में आपने भारतीय पत्रकारिता का विकासक्रम को देखा। स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वतंत्रता के बाद जनसंचार के क्षेत्र में आए बदलावों से आपका परिचय हुआ।

आज मीडिया अपने लगभग 200 वर्षों के इतिहास में एक लंबा और विविधतापूर्ण सफ़र तय किया है। बेहद नाजुक पीले कागज पर छपने वाले अख़बार से लेकर आज टैबलेट पर पढ़े जाने वाला ई-अख़बार की यात्रा रोचक रही है। आज के युग में

सूचनाओं का अथाह प्रवाह बढ़ गया है। सोशल मीडिया ने जनसंचार को एक नया आयाम प्रदान किया है। आज का मानव समाचार के लिए केवल अख़बार, रेडियो या टेलीविजन पर निर्भर नहीं है बल्कि इंटरनेट के कारण यह सारी दूनिया सिमटकर उसके स्मार्ट फ़ोन पर आ गई है। आज केवल एक क्लिक से वह खबर न सिर्फ़ पढ़ सकता है बल्कि उससे संबंधित फोटो, विडियो आदि भी देख सकता है। कुल मिलाकर इस इकाई के माध्यम से आप भारतीय जनसंचार, हिंदी मीडिया तथा सोशल मीडिया के विविध आयामों से परिचित हो गए होंगें।

.....

शब्दावली

मीडिया : संचार माध्यम (*मीडिया*) के अन्तर्गत टेलीविजन , रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, तथा अन्तरजालीय पृष्ट आदि परिभाषित होते हैं।

उपनिवेशवाद : किसी एक भौगोलिक क्षेत्र के लोगों द्वारा किसी दूसरे भौगोलिक क्षेत्र में उपनिवेश (कॉलोनी) स्थापित करना और यह मान्यता रखना कि यह एक अच्छा काम है , उपनिवेशवाद (Colonialism) कहलाता है।

पत्रकारिता : पत्रकारिता (अंग्रेजी : journalism) आधुनिक सभ्यता का एक प्रमुख व्यवसाय है जिसमें समाचारों का एकत्रीकरण, लिखना, जानकारी एकत्रित करके पहुँचाना, सम्पादित करना और सम्यक प्रस्तुतीकरण आदि सम्मिलित हैं। आज के युग में पत्रकारिता के भी अनेक माध्यम हो गये हैं; जैसे - अखबार, पत्रिकायें, रेडियो, दूरदर्शन, वेब-पत्रकारिता आदि।

सूचना विस्फोट : सूचनाओं का अत्यंत तीव्र गति से विविध आधुनिक संचार माध्यमों से अनियंत्रित प्रवाह सूचना का विस्फोट कहलाता है।

सोशल नेटवर्किंग साइट : आपस में संचार हेतु डिजाइन की गई वेबसाइट जिसमें विचार, छायाचित्र, विडियो, ऑडियो आदि साझा किए जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर फेसबुक।

.....

बोध प्रश्नों के उत्तर

.....

बोध प्रश्न 1

1) 1826 में कलकत्ता से जुगल किशोर सुकुल ने उदंत मार्तण्ड नामक पहला हिंदी समाचार पत्र प्रकाशित किया था। हिंदी मीडिया ने अपनी दावेदारी बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में पेश की जब गणेश शंकर विद्यार्थी ने प्रताप , बालमुकुंद गुप्त और अम्बिका शरण वाजपेयी ने भारत मित्र , महेशचंद्र अग्रवाल ने विश्वमित्र और शिवप्रसाद गुप्त ने आज की स्थापना की। एक तरह से यह हिंदीप्रेस की नींव पड़ी।- प्रेस की शुरुआत थी। इसी दौरान उर्दू- अबुल कलाम आज़ाद ने अल-बिलाग़ का प्रकाशन शुरू किया- हिलाल और अल, मुहम्मद अली ने हमदर्द का। लखनऊ से हकीकत, लाहौर से प्रताप और मिलाप और दिल्ली से तेज़ का प्रकाशन होने लगा। बांग्ला में संध्या, नायक, बसुमती, हितबादी, नबशक्ति, आनंद बाज़ार पत्रिका , जुगांतर, कृषक और नबजुग जैसे प्रकाशन अपने अपने दृष्टिकोणों से उपनिवेशवाद विरोधी अभियान में भागीदारी-कर रहे थे। मराठी में इंदुप्रकाश, नवकाल, नवशक्ति और लोकमान्य ; गुजराती में गुजराती पंच, सेवक, गुजराती और समाचार , वंदेमातरम्; दक्षिण भारत में मलयाला मनोरमा , मातृभूमि, स्वराज, अलअमीन-, मलयाला राज्यम, देशाभिमानी, संयुक्त कर्नाटक, आंध्र पत्रिका, कल्कि, तंति, स्वदेशमित्रम्, देशभक्तम् और दिनामणि यही भूमिका निभा रहे थे।

2)

1. एक सुपरिभाषित 'राष्ट्र-हित' के आधार पर आधुनिक भारत के निर्माण में सचेत और सतर्क भागीदारी की परियोजना,
2. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में कटौती करने की सरकारी कोशिशों के ख़िलाफ़ संघर्ष,
3. विविधता एवं प्रसार की ज़बरदस्त उपलब्धि के साथ-साथ भाषाई पत्रकारिता द्वारा अपने महत्त्व और श्रेष्ठता की स्थापना, और
4. प्रसारण-मीडिया की सरकारी नियंत्रण से एक सीमा तक मुक्ति।

बोध प्रश्न 2

1) 1826 ई से .1873 ई तक को हम हिंदी पत्रकारिता का पहला चरण कह सकते हैं। .1873 ईमें . भारतेन्दु ने हरिश्चंद्र" की स्थापना की। एक वर्ष बाद यह पत्र "हरिश्चंद्र मैगजीन" चंद्रिका " पत्र "कविवचन सुधा" नाम से प्रसिद्ध हुआ। वैसे भारतेन्दु का1867 में ही सामने आ गया था

और उसने पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण भाग लिया था; परंतु नई भाषाशैली का प्रवर्तन 1873 में से "हरिश्चंद्र मैगजीन" ही हुआ। इस बीच के अधिकांश पत्र प्रयोग मात्र कहे जा सकते हैं और उनके पीछे पत्रकला का ज्ञान अथवा नए विचारों के प्रचार की भावना नहीं है। उदंत" मार्तंडके बाद प्रमुख पत्र हैं " :

बंगदूत (1829), प्रजामित्र (1834), बनारस अखबार (1845), मार्तंड पंचभाषीय (1846), ज्ञानदीप (1846), मालवा अखबार (1849), जगद्दीप भास्कर (1849), सुधाकर (1850), साम्यदंड मार्तंड (1850), मजहरुलसरूर (1850), बुद्धिप्रकाश (1852), ग्वालियर गजेट (1853), समाचार सुधावर्षण (1854), दैनिक कलकत्ता , प्रजाहितैषी (1855), सर्वहितकारक (1855), सूरजप्रकाश (1861), जगलाभचिंतक (1861), सर्वोपकारक (1861), प्रजाहित (1861), लोकमित्र (1835), भारतखंडामृत (1864), तत्वबोधिनी पत्रिका (1865), ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका (1866), सोमप्रकाश (1866), सत्यदीपक (1866), वृत्तांतविलास (1867), ज्ञानदीपक (1867), कविवचनसुधा (1867), धर्मप्रकाश (1867), विद्याविलास (1867), वृत्तांतदर्पण (1867), विद्यादर्श (1869), ब्रह्मज्ञानप्रकाश (1869), अलमोड़ा अखबार (1870), आगरा अखबार (1870), बुद्धिविलास (1870), हिंदू प्रकाश (1871), प्रयागदूत (1871), बुंदेलखंड अखबर (1871), प्रेमपत्र (1872) और बोधा समाचार (1872)।

2) आधुनिक युग में राजनीतिक क्षेत्र में इस युग में जिन पत्रपत्रिकाओं की धूम रही वे हैं

-

कर्मवीर (1924), सैनिक (1924), स्वदेश (1921), श्रीकृष्णसंदेश (1925), हिंदूपंच (1926), स्वतंत्र भारत (1928), जागरण (1929), हिंदी मिलाप (1929), सचित्र दरबार (1930), स्वराज्य (1931), नवयुग (1932), हरिजन सेवक (1932), विश्वबंधु (1933), नवशक्ति (1934), योगी (1934), हिंदू (1936), देशदूत (1938), राष्ट्रीयता (1938), संघर्ष (1938), चिनगारी (1938), नवज्योति (1938), संगम (1940), जनयुग (1942), रामराज्य (1942), संसार (1943), लोकवाणी (1942), सावधान (1942), हुंकार (1942) और सन्मार्ग (1943), जनवार्ता (1972)।

बोध प्रश्न 3

1) "इंटरनेट का बीजारोपण सन 1969 में अमरीका की प्रतिरक्षा विभाग ARPA (Advanced Research Project Agency) के शोध कार्यक्रम के क्रियान्वयन से हुआ, जिसका उद्देश्य एक ऐसी तकनीक का विकास करना था जिसके कारण अलग-अलग कंप्यूटरों के मध्य एक सुरक्षित कम्युनिकेशन संभव हो सके , जिससे विभिन्न प्रकार के नेटवर्क को एक दूसरे से जोड़ा जा सके। इससे नेटवर्क की विश्वसनीयता बढ़ जायेगी। उपरोक्त नेटवर्क को (ARPANET) नाम दिया गया। प्रारंभ में इसका उपयोग केवल रक्षा संबंधी जरुरतों के लिए किया गया परंतु बाद में रक्षा संबंधी मामलों में शोध कर रहे संस्थानों व विश्वविद्यालयों को भी इस नेटवर्क से जोड दिया गया इस नेटवर्कों के नेटवर्क को इंटनेट (Internet) नाम दिया गया। यह TCP/IP (Transmission Control Procedure/Internet Protocol) अमेरिक न सुरक्षा विभाग द्वारा विकसित एक नेटवर्क में सहायक उपकरण पर आधारित है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इंटरनेट का कनेक्शन सन 1973 में इंग्लैण्ड और नार्वे के मध्य स्थापित किया गया। भारत में पहला इंटरनेट कनेक्शन प्रयोग करने वाला संस्थान था नई दिल्ली स्थित नेशनल इन्फोर्मेटिक सेंटर (NIC)। भारत में व्यावसायिक रुप से प्रथम इंटरनेट सेवा 1995-96 में भारत सरकार के उपक्रम विदेश संचार निगम लिमिटेड (VSNL) ने की।

बोध प्रश्न 4

1) आज के अत्याधुनिक युग में सोशल मीडिया पर चर्चा किए बिना जनसंचार के सभी आयामों को जान पाना संभव नहीं है। सामाजिक मीडिया पारस्परिक संबंध के लिए अंतर्जाल या अन्य माध्यमों द्वारा निर्मित आभासी समूहों को संदर्भित करता है। यह व्यक्तियों और समुदायों के साझा, सहभागी बनाने का माध्यम है। इसका उपयोग सामाजिक संबंध के अलावा उपयोगकर्ता सामग्री के संशोधन के लिए उच्च पारस्परिक प्लेटफार्म बनाने के लिए मोबाइल और वेब आधारित प्रौद्योगिकियों के प्रयोग के रूप में भी देखा जा सकता है। सामाजिक मीडिया के कई रूप हैं जिनमें कि इन्टरनेट फोरम, वेबलॉग, सामाजिक ब्लॉग, माइक्रोब्लागिंग, विकीज, सोशल नेटवर्क, पॉडकास्ट, फोटोग्राफ, चित्र, चलचित्र आदि सभी आते हैं। अपनी सेवाओं के अनुसार सोशल मीडिया के लिए कई संचार प्रौद्योगिकी उपलब्ध हैं।

2) सामाजिक मीडिया अन्य पारंपरिक तथा सामाजिक तरीकों से कई प्रकार से एकदम अलग है। इसमें पहुँच, आवृत्ति, प्रयोज्य, ताजगी और स्थायित्व आदि तत्व शामिल हैं। इन्टरनेट के प्रयोग से कई प्रकार के प्रभाव होते हैं। निएलसन के अनुसार 'इन्टरनेट प्रयोक्ता अन्य साइट्स की अपेक्षा सामाजिक मीडिया साइट्स पर ज्यादा समय व्यतीत करते हैं'।

दुनिया में दो तरह की सिविलाइजेशन का दौर शुरू हो चुका है , वर्चुअल और फिजीकल सिविलाइजेशन। आने वाले समय में जल्द ही दुनिया की आबादी से दो-तीन गुना अधिक आबादी अंतर्जाल पर होगी। दरअसल , अंतर्जाल एक ऐसी टेक्नोलाजी के रूप में हमारे सामने आया है, जो उपयोग के लिए सबको उपलब्ध है और सर्वहिताय है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स संचार व सूचना का सशक्त जरिया हैं , जिनके माध्यम से लोग अपनी बात बिना किसी रोक-टोक के रख पाते हैं। यही से सामाजिक मीडिया का स्वरूप विकसित हुआ है।

****